सांध्य दैनिक

श्रीकंचनपथ

RNI. Reg. No. CHHHIN/2009/30534
डाक पंजीयन क्रं.-छ.ग./ दुर्ग /94/2023-25

लीपा पोती नहीं सिर्फ सच

वर्ष- 16 अंक - 54 | www.shreekanchanpath.com | संस्थापक एवं प्रेरणास्रोत- स्व. श्रीमती रजनी अग्रवाल | भिलाई, शनिवार 07 दिसंबर 2024 | पृष्ठ 8- मूल्य 1/-

खास-खबर

बीएड, डीएलएड, बीएबीएड एवं बीएससीबीएड में प्रवेश के लिए अंतिम आबंटन की तिथि जारी

रायपुर। छत्तीसगढ़ राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ने डीएलएड, बीएड, बीएबीएड और बीएससीबीएड पाठ्यक्रम 2024-25 के लिए प्रवेश प्रक्रिया के अंतिम चरण की तिथियां घोषित कर दी है। जिन अभ्यर्थियों ने पूर्व चरणों में प्रवेश नहीं लिया है, वे नि:शुल्क तथा जो पहली बार पंजीयन कर रहे होंगे वे निर्धारित राशि के शुल्क के साथ किसी महाविद्यालय व संस्था 12 दिसंबर 2024 तक अपने विकल्प ऑनलाइन दर्ज कर सकते हैं।

अंतिम चरण की प्रथम सूची का प्रकाशन 12 दिसंबर 2024 को किया जाएगा। महाविद्यालय में प्रवेश की तिथि 12 से 16 दिसंबर 2024 को शाम 5 बजे तक निर्धारित है। इसी प्रकार द्वितीय सूची का प्रकाशन 19 दिसंबर 2024 एवं महाविद्यालय में प्रवेश के लिए अंतिम तिथि 22 दिसंबर 2024 शाम 5 बजे तक होगी। अंतिम सूची की प्रकाशन 23 दिसंबर 2024 को एवं अंतिम प्रवेश की तिथि 24 दिसंबर 2024 को शाम 5 बजे तक होगी। विस्तृत जानकारी के लिए एससीईआरटी रायपुर की आधिकारिक वेबसाइट पर देखा जा सकता है। अभ्यर्थी चिप्स के आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर निर्धारित पंजीयन की कार्यवाही कर सकते हैं।

रांची व खुर्दा रेलमंडल में पावर ब्लाक, छत्तीसगढ़ से गुजरने वाली तीन ट्रेनों का रूट बदला

रायपुर। रेलवे प्रशासन द्वारा विभिन्न रेलमंडलों में अधोसंरचना विकास के कार्यों को शीघ्र पूरा करने का प्रयास किया जा रहा

है। इसी कड़ी में दक्षिण पूर्व रेलवे के रांची रेल मंडल एवं ईस्ट कोस्ट रेल्वे के खुर्दा रेल मण्डल में ट्राफ्फिक कम पावर ब्लॉक लिया जाएगा। रांची रेल मंडल में यह कार्य के लिए दिनांक 12 से 26 दिसंबर 2024 तक किया जाएगा एवं ईस्ट कोस्ट रेल्वे के खुर्दा रेल मण्डल में दिनांक 07 से 08 दिसंबर 2024 तक किया जाएगा। इसके कारण छत्तीसगढ़ से होकर गुजरने वाली कुछ ट्रेनों का रूट बदला गया है। वहीं 8 दिसम्बर 2024 को गाडी संख्या 22910 पूरी-वलसाड एक्सप्रेस पूरी से 4 घंटे 50 मिनिट देरी से रवाना होगी।

परिवर्तन मार्ग से चलने वाली गाडियों में दिनांक 18 दिसम्बर, 2024 को गाडी संख्या 07255 हैदराबाद-पटना स्पेशल परिवर्तन मार्ग राऊरकेला-सिनी-चांडिल-मूरी-कोटशिला होकर चलेगी। दिनांक 21 दिसम्बर 2024 को गाडी संख्या 13425 मालदा-सूरत एक्सप्रेस परिवर्तन मार्ग राऊरकेला-सिनी-चांडिल-मूरी-कोटशिला होकर चलेगी। दिनांक 17 दिसम्बर 2024 को गाडी संख्या 07052 रक्सौल-सिकंदराबाद एक्सप्रेस परिवर्तन मार्ग राऊरकेला-सिनी-चांडिल-मूरी-कोटशिला होकर चलेगी।

छत्तीसगढ़ में नेशनल हाइवे होंगे अपग्रेड, हाईलेवल पुल भी बनेंगे, केन्द्र सरकार ने दिए 147 करोड़

मुख्यमंत्री साय ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और केन्द्रीय मंत्री नितिन गड़करी का जताया आभार

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। छत्तीसगढ़ से गुजरने वाले नेशनल हाइवे को अपग्रेड किया जाएगा। साथ ही हाईलेवल पुल व पुलिया का निर्माण भी शुरू होगा। इसके लिए केन्द्र सरकार ने छत्तीसगढ़ को 147 करोड़ से ज्यादा की राशि रिलीज की है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने इसके लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और केन्द्रीय मंत्री नितिन गड़करी का आभार जताया है।

बता दें डेवलपमेंट वर्क के लिए केन्द्र सरकार ने लगातार फंड मिल रहा है। इसी कड़ी में भारत सरकार के केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने छत्तीसगढ़ राज्य अंतर्गत नेशनल हाईवे क्रमांक 130 में उच्च स्तरीय पुल तथा नेशनल हाईवे क्रमांक एनएच 153 के उन्नयन तथा नेशनल हाईवे क्रमांक 130 सी फेर लेन सड़क निर्माण के लिए कुल 147 करोड़ 26 लाख रुपए की स्वीकृति दी है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने इसके लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी के प्रति आभार जाताया है।

अपग्रेडेशन के लिए इन नेशनल हाइवे का चयन

केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार राष्ट्रीय राजमार्ग 130 बिलासपुर-अंबिकापुर मार्ग में चुलहट नाला पर उच्च स्तरीय पुल निर्माण के लिए 4 करोड़ 88 लाख रुपए और राष्ट्रीय राजमार्ग 153 रायगढ़-सराईपाली मार्ग के चंद्रपुर सेक्शन में 2 लेन एवं उन्नयन कार्य के लिए 99.13 करोड़ रुपए तथा नेशनल हाईवे क्रमांक 130 सी में गरियाबंद नगरीय क्षेत्र में फेर लेन सड़क निर्माण के लिए 43.25 करोड़ की स्वीकृति दी गई है।

छत्तीसगढ़ में शुरू होंगे चार नए केन्द्रीय विद्यालय, भारत सरकार ने दी मंजूरी

रायपुर। छत्तीसगढ़ के लिए बड़ी खुशखबरी है। जल्द ही छत्तीसगढ़ में चार नए केन्द्रीय विद्यालय शुरू हो जाएंगे। केन्द्र सरकार ने छत्तीसगढ़ के चार जिलों में नए केन्द्रीय विद्यालय शुरू करने की मंजूरी दे दी है। नये स्वीकृत केन्द्रीय विद्यालय मुंगेली, सूरजपुर, बेमेतरा और जांजगीर-चांपा जिले के हसौद में प्रारंभ होंगे। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने छत्तीसगढ़ में चार नये केन्द्रीय विद्यालय खोलने की मंजूरी पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार व्यक्त किया है।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा है कि छत्तीसगढ़ में नये केन्द्रीय विद्यालय के प्रारंभ होने से राज्य के विद्यार्थियों को उच्च स्तरीय एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलेगी। उन्होंने कहा है कि केन्द्रीय विद्यालय अभिनव शिक्षण पद्धति और नवीनतम अधोसंरचना को लेकर लोकप्रिय है। छत्तीसगढ़ में इन

विद्यालयों के प्रारंभ होने से प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को बेहतर शैक्षणिक वातावरण मिलेगा। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आज आर्थिक मामलों के मंत्रिमण्डल समिति द्वारा देशभर में 85 नए केन्द्रीय विद्यालय (केवी) खोलने की मंजूरी दी गई है।

आरक्षक भर्ती : दुर्ग रेंज में 8 दिसंबर से फिर शुरू होगा फिजिकल टेस्ट, युवाओं को दोबारा जारी होंगे प्रवेश पत्र

- हाईकोर्ट से रोक हटने के बाद आरक्षक भर्ती का रास्ता साफ, सातवीं बटालियन में होगा टेस्ट

श्रीकंचनपथ न्यूज

दुर्ग। छत्तीसगढ़ में आरक्षक भर्ती पर रोक हटने के बाद 8 दिसबंर से भिलाई के बटालियन में फिर से फिजिकल टेस्ट होगा। दुर्ग संभाग के अंतर्गत दुर्ग, बालोद, बेमेतरा जिलों के लिए भर्ती प्रक्रिया रविवार से शुरू होगी। आईजी दुर्ग के निर्देश पर सभी अभ्यर्थियों को फिजिकल और दस्तावेज सत्यापन के लिए बुलाया गया है। इन्हें फिर से प्रवेश पत्र भी जारी किए जा रहे हैं। 8 दिसंबर के लिए जिनके प्रवेश पत्र जारी किए गए हैं वे रविवार को फिजिकल के लिए बुलाया गया है।

बता दें छत्तीसगढ़ में आरक्षक भर्ती प्रक्रिया 16 नवंबर से शुरू हुई थी। इस दौरान दुर्ग रेंज के लिए तीन जिलों दुर्ग,

बालोद, बेमेतरा के लिए सातवीं बटालियन परिसर भिलाई में भर्ती शुरू हुई थी। इस बीच पुलिस कर्मियों के बच्चों को दी जाने वाली विशेष छूट के खिलाफ हाईकोर्ट में याचिका लगाई गई। याचिका का सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट ने 27 नवंबर को भर्ती प्रक्रिया पर रोक लगा दी थी। इसके बाद 4 दिसंबर को हाईकोर्ट ने फिर से सुनवाई कर भर्ती प्रक्रिया पर लगी रोक हटा दी। जस्टिस राकेश मोहन पाण्डेय की बेंच ने कहा कि भर्ती प्रक्रिया में केवल शहीद पुलिसकर्मियों और नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में तैनात जवानों के बच्चों को ही छूट मिलनी चाहिए। अन्य सभी अभ्यर्थियों के लिए समान नियम लागू होंगे। इसके साथ ही छत्तीसगढ़ में फिर से आरक्षक भर्ती का रास्ता खुल गया।

न्यायालय के आदेश के बाद फिर से शुरू हो रही भर्ती प्रक्रिया

न्यायालय के आदेश के बाद दुर्ग रेंज में 8 दिसंबर से फिर से भर्ती प्रक्रिया शुरू की जा रही है। इसके तहत जिन अभ्यर्थियों को शारीरिक माप और दस्तावेज जांच के लिए 8 दिसंबर के लिए प्रवेश पत्र जारी किए गए हैं, वे अपने तय समय और डेट के अनुसार अपना फिजिकल टेस्ट दे पाएंगे। अभ्यर्थी जिनको 27 नंबर से 6 दिसंबर के बीच तिथियों का प्रवेश पत्र जारी किया गया था। वो भर्ती में रोक लगने की वजह से फिजिकल नहीं दे पाए थे। उनको फिर से नया प्रवेश पत्र जारी किया जाएगा। वे सभी नई तिथि और समय पर आकर फिजिकल टेस्ट दे पाएंगे।

नक्सलियों ने बेटे के सामने कर दी आंगनबाड़ी सहायिका की हत्या, धारदार हथियार से वार

- छत्तीसगढ़ में मुखबिरी के शक में घर में घुसकर धारदार-हथियार से काटा 3 दिन में तीसरी हत्या

श्रीकंचनपथ न्यूज

बीजापुर। छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में नक्सलियों ने घर में घुसकर बेटे के सामने आंगनबाड़ी सहायिका को मार डाला। नक्सलियों ने उस पर पुलिस की मुखबिरी करने का आरोप लगाया है। पिछले 3 दिन में माओवादियों ने मुखबिरी के शक में यह तीसरी हत्या की है। मामला बासागुड़ा थाना क्षेत्र का है।

मिली जानकारी के मुताबिक, आंगनबाड़ी सहायिका लक्ष्मी पदम तिम्मापुर गांव की रहने वाली थी। शुक्रवार देर रात सादे कपड़ों में

नक्सली उसके घर पहुंच गए। महिला की पिटाई करने लगे। महिला का बेटा भी घर में ही था। उसकी भी पिटाई की गई। जिसके बाद महिला की धारदार हथियार से हत्या कर दी।

भैरमगढ़ एरिया कमेटी ने ली हत्या की जिम्मेदारी

हत्या के बाद नक्सलियों ने शव के पास पर्चा भी फेंका है। जिसमें नक्सल संगठन के भैरमगढ़ एरिया कमेटी ने हत्या की जिम्मेदारी ली है। पर्चा में लिखा है कि, इसे पहले भी समझाइश दी गई थी, लेकिन मानी नहीं। पुलिस से लगातार संपर्क में थी। सूचना देने का काम करती थी। इसलिए इसे मौत की सजा दी गई है। जिस जगह हत्या हुई है, वहां से महज एक किमी की दूरी पर ही फोर्स का कैंप है। वहीं हत्या की जानकारी पुलिस को दी गई है। बताया जा रहा है कि, पुलिस गांव में पहुंच चुकी है। फिलहाल, मामले की जांच की जा रही है।

खुर्सीपार में आधीरात युवक की हत्या, सिर पर बोल्डर पटककर ले ली जान, हिरासत में संदेही

शुक्रवार रात की घटना, शराब पार्टी के बाद बिगड़ी बात

श्रीकंचनपथ न्यूज

भिलाई। दुर्ग जिले के खुर्सीपार थाना क्षेत्र में शुक्रवार की आधीरात को युवक की हत्या कर दी गई। बताया जा रहा है कि युवक की हत्या उसके दोस्तों ने ही की है। आधीरात शराब पीने के बाद विवाद हुआ और बोल्डर सिर पर पटक उसकी हत्या कर दी गई। घटना की सूचना मिलने पर खुर्सीपार पुलिस के साथ शहर एएसपी सुखनंदन राठौर मौके पर पहुंचे। शव को पीएम के लिए भेजा गया। वहीं इस मामले में पुलिस ने कुछ संदेहियों को भी हिरासत में लिया है

मिली जानकारी के अनुसार घटना खुर्सीपार के ट्रांसपोर्ट नगर जाने वाले मार्ग पर अंवति बाई लोधी भवन के पीछे नहर के पास की है। घटना का समय आधीरात लगभग 10:30 बजे के बीच की बताई जा रही है। मृतक युवक की पहचान मिनीमाता नगर निवासी लोकेश्वर बंजारे के रूप में हुई है। जिस जगह पर हत्या की गई है वहां बड़े बोल्डर पर खून ही खून लगा हुआ है। जैसे ही पुलिस को सूचना मिली खुर्सीपार थाना प्रभारी अंबर सिंह भारद्वाज टीम के साथ मौके पर पहुंचे। वहीं रात में ही एएसपी सिटी सुखनंदन राठौर भी मौके पर पहुंच गए। रात में ही शव को सुपेला के मरच्यूरी में रखवा दिया गया है।

इधर घटना के बाद पुलस ने तत्परता दिखाते हुए कुछ संदेहियों को हिरासत में लिया है। बताया जा रहा है कि हत्या का मुख्य आरोपी अजय यादव नाम का युवक है जो उसी क्षेत्र का ही रहने वाला है। मृतक लोकेश्वर बंजारे के साथ अजय यादव भी मजदूरी का काम करता है। शुक्रवार की रात को उसी के बुलाने पर लोकेश्वर उससे मिलने गया था। साथ में कुछ और दोस्त भी थे। सभी ने मिलकर शराब पी और उसके बाद इनके बीच विवाद हुआ। विवाद का कारण स्पष्ट नहीं है लेकिन ऐसी चर्चा है कि किसी लड़की से प्रेम प्रसंग को लेकर विवाद हुआ था। हालांकि यह केवल आशंका है पुलिस संदेहियों से पूछताछ कर रही है। घटना की सूचना के बाद खुर्सीपार पुलिस ने रात को ही दो से तीन संदेहियों को हिरासत में लिया है और उनसे पूछताछ की जा रही है।

एएसपी सुखनंदन राठौर ने बताया कि आधी रात की घटना है। हत्या का कारण अभी पता नहीं चल पाया है। संभावना है कि शराब पीने के बाद आपस में विवाद हुआ होगा। फिलहाल मामले में कुछ संदेहियों को हिरासत में लिया गया है और पूछताछ के बाद ही खुलासा हो पाएगा। एएसपी राठौर ने कहा कि जल्द ही मामले का खुलासा हो जाएगा।

गुपचुप आगे निकल गया गुजरात

श्रीकंचनपथ

वैसे तो भारतीय टैलेंट का दुनिया में कोई मुकाबला नहीं है। हमारी क्रिएटिविटी भी औरों से जुदा है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भले ही हमारी गति मंथर हो पर उल्लू बनाने की हमारी कला का कोई सानी नहीं। एक समय था जब भांति-भांति के अपराधों के लिए बिहार चर्चा में होता था। पर अब गुजरात गुपचुप सबसे आगे निकल गया है। गुजरात को पुरुषार्थियों का राज्य माना जाता है। महात्मा गांधी, सरदार पटेल, दादा भाई नौरोजी, अजीम प्रेमजी, जमशेदजी टाटा, नरेन्द्र मोदी, अमित शाह।।।। लिस्ट काफी लंबी है। पर अब यही गुजरात किसी और कारण से सुर्खियों में है। अब इस राज्य में ठगी के ऐसे-ऐसे मामले सामने आ रहे हैं जिनका रिकार्ड अब तक बिहार के पास था। नया मामला फर्जी मेडिकल डिग्री का है। गजब यह कि यह रैकेट पिछले 22 साल से सक्रिय था। अपढ़, कुपढ़ और अनपढ़ों ने मिलकर एक ऐसा सेटअप बनाया था जो मात्र 70 हजार रुपए में मेडिकल डिग्रियां बेचता था। यह डिग्री थी बैचलर ऑफइलेक्ट्रो होम्योपैथी थी। दरअसल, भारत में ऐसी किसी डिग्री की मान्यता नहीं है। जाहिर है कि इसके लिए कोई नियम कानून भी नहीं है। अपने भिलाई में भी डॉ बेबी थॉमस इसका कालेज चलाया करते थे। पर धंधा चला नहीं और एक दिन बंद हो गया। कुछ ऐसा ही हुआ डॉ रमेश के साथ। 1990 के दशक में उसने बीएचएमएस की पढ़ाई की थी। इक्का दुक्का भाषणों के अलावा उसके पास कोई खास काम नहीं था। 2002 में उसने एक कालेज भी खोला पर वह चला नहीं। जब उसे पता चला कि इलेक्ट्रोहोम्योपैथी के लिए देश या राज्य में कोई नियम कानून ही नहीं है तो उसने इसी का धंधा करने का विचार बना लिया। कुछ लोगों को काम पर रखा और एक वेबसाइट खोल ली। 70-70 हजार रुपए में डाक्टरी की डिग्री बेचना शुरू कर दिया। ऐसे फर्जी डाक्टरों का वह खुद ही पंजीयन करता था और उसके नवीनीकरण के लिए 5-5 हजार रुपए शुल्क भी वसूलता था। वैसे यह कोई पहला मामला नहीं है गुजरात में ठगी का। अभी 2 दिसंबर को ही यहां फर्जी ईडी की टीम ने ज्वेलरों की दुकान पर छापेमारी की थी। पिछले महीने एक और मामला सामने आया था जिसमें एक थिएटर में चल रहे अस्पताल का भांडाफोड़ किया गया था। यहां सेटअप से लेकर डाक्टरों तक सभी फर्जी थे। उससे एक माह पहले एक फर्जी ट्रिब्यूनल (कोर्ट) का खुलासा हुआ था। यहां स्वयंभू मजिस्ट्रेट का दरबार लगा करता था। जमीनों की रजिस्ट्री तक हो जाती थी। दो साल पहले एक आदमी ने खुद को पीएमओ का अधिकारी बताते हुए यहां जमकर धोखाधड़ी की थी। सवाल यह है कि इतना हौसला आता कहां से है? पहचान और पहुंच बुरी चीज है। यह सबको पचती नहीं। ख्वाब तो बड़े हो ही जाते हैं, हौसले भी बुलंद हो जाते हैं। जो होगा देखा जाएगा। कुछ गड़बड़ हो गई तो भाई संभाल लेगा।

संपादकीय

दिव्यांगजनों की उन्नति के लिए दस वर्षों में मजबूत नींव रखी

मैं जब से सार्वजनिक जीवन में हूं, मैंने हर मौके पर दिव्यांगजनों का जीवन आसान बनाने के लिए प्रयास किए हैं। प्रधानमंत्री बनने के बाद मैंने इस सेवा को राष्ट्र का संकल्प बनाया। 2014 में सरकार बनने के बाद हमने सबसे पहले 'विक्लांग' शब्द के स्थान पर 'दिव्यांग' शब्द को प्रचलित करने का फैसला लिया। तीन दिसंबर को पूरा विश्व अंतरराष्ट्रीय दिव्यांग दिवस के रूप में मनाता है। यह दिन दिव्यांगजनों के साहस, आत्मबल और उपलब्धियों को नमन करने का विशेष अवसर होता है।

भारत के लिए ये अवसर एक पवित्र दिन जैसा है। शास्त्रों और लोक ग्रंथों में दिव्यांग साथियों के लिए सम्मान का भाव देखने को मिलता है। आज भारत में हमारे दिव्यांगजन इसी उत्साह से देश के सम्मान और स्वाभिमान की ऊर्जा बन रहे हैं। इस वर्ष ये दिन और भी विशेष है। इसी साल भारत के संविधान के 75 वर्ष पूर्ण हुए हैं। भारत का संविधान हमें समानता और अंत्योदय के लिए काम करने की प्रेरणा देता है। संविधान की इसी प्रेरणा को लेकर बीते 10 वर्षों में हमने दिव्यांगजनों की उन्नति की मजबूत नींव रखी है। इन वर्षों में देश में दिव्यांगजनों के लिए अनेक नीतियां बनी हैं, अनेक निर्णय हुए हैं।

इसे राष्ट्र संकल्प बनाया

मैं जब से सार्वजनिक जीवन में हूं, मैंने हर मौके पर दिव्यांगजनों का जीवन आसान बनाने के लिए प्रयास किए हैं। प्रधानमंत्री बनने के बाद मैंने इस सेवा को राष्ट्र का संकल्प बनाया। 2014 में सरकार बनने के बाद हमने सबसे पहले 'विक्लांग' शब्द के स्थान पर 'दिव्यांग' शब्द को प्रचलित करने का फैसला लिया। ये सिर्फ शब्द का परिवर्तन नहीं था, इसने समाज में दिव्यांगजनों की गरिमा भी बढ़ाई और उनके योगदान को भी बड़ी स्वीकृति दी। इस निर्णय ने ये संदेश दिया कि सरकार एक ऐसा समावेशी वातावरण चाहती है, जहां किसी व्यक्ति के सामने उसकी शारीरिक चुनौतियां दीवार ना बनें और उसे उसकी प्रतिभा के अनुसार पूरे सम्मान के साथ राष्ट्र निर्माण का अवसर मिले।

बड़ा संतोष मिला

हर वर्ष देश भर में हम दिव्यांग दिवस पर अनेक कार्यक्रम करते हैं। मुझे आज भी याद है 9 साल पहले हमने आज के ही दिन सुगम्य भारत अभियान का शुभारंभ किया था। 9 सालों में इस अभियान ने जिस तरह से दिव्यांगजनों को सशक्त किया, उससे मुझे बड़ा संतोष मिला है। 'सुगम्य भारत' ने ना सिर्फ दिव्यांगजनों के मार्ग से बाधाएं हटाईं, बल्कि उन्हें सम्मान और समृद्धि का जीवन भी दिया।

पहले की नीतियां थीं बाधक

पहले की सरकारों के समय जो नीतियां थीं...उनसे दिव्यांगजन सरकारी नौकरियों और उच्च शिक्षा के अवसरों से पीछे रह जाते थे। हमने वो स्थितियां बदलीं। आरक्षण की व्यवस्था को नया रूप मिला। 10 वर्षों में दिव्यांगजन के कल्याण के लिए खर्च होने वाली राशि को भी तीन गुना किया गया। इन निर्णयों ने दिव्यांगजनों के लिए अवसरों और उन्नतियों के नए रास्ते बनाए। आज हमारे दिव्यांग साथी, भारत के निर्माण के समर्पित साथी बनकर हमें गौरवान्वित कर रहे हैं। पैरालंपिक में हमारे खिलाड़ियों ने देश को जो सम्मान दिलाया है, वो इसी ऊर्जा का प्रतीक है।

21 श्रेणियां जोड़ीं

मेरे दिव्यांग भाई-बहनों का जीवन सरल, सहज और स्वाभिमानी हो, सरकार का मूल सिद्धांत यही है। हमने विकलांग व्यक्तियों का अधिकार अधिनियम को भी इसी भाव से लागू किया। इस ऐतिहासिक कानून में दिव्यांग की परिभाषा की कैटेगरी को भी सात से बढ़ाकर 21 किया गया। पहली बार हमारे एसिड अटैक सर्वाइवर्स भी इसमें शामिल किए । प्रतिभा पर विश्वास किया

मैंने हमेशा अपने दिव्यांग साथियों की उस अद्भुत प्रतिभा पर विश्वास किया है। और मैं पूरे गर्व से कहता हूं, कि हमारे दिव्यांग भाई-बहनों ने एक दशक में मेरे इस विश्वास को और प्रगाढ़ किया है। मुझे यह देखकर भी गर्व होता है कि उनकी उपलब्धियां कैसे हमारे समाज के संकल्पों को नया आकार दे रही हैं। आज जब पैरालंपिक का मेडल सीने पर लगाकर, मेरे देश के खिलाड़ी मेरे घर पर पधारते हैं, तो मेरा मन गौरव से भर जाता है। हर बार जब मन की बात में मैं अपने दिव्यांग भाई-बहनों की प्रेरक कहानियों को आपके साथ साझा करता हूं, तो मेरा हृदय गर्व से भर जाता है। शिक्षा हो, खेल या फिर स्टार्टअप, वे सभी बाधाओं को तोड़कर नई ऊंचाइयां छू रहे हैं और देश के विकास में भागीदार बन रहे हैं।

प्रेरणा पुंज बनेंगे

मैं पूरे विश्वास से कहता हूं कि 2047 में जब हम स्वतंत्रता का 100वां उत्सव मनाएंगे, तो हमारे दिव्यांग साथी पूरे विश्व का प्रेरणा पुंज बने दिखाई देंगे। आज हमें इसी लक्ष्य के लिए संकल्पित होना है।आइए, हम सब मिलकर एक ऐसे समाज का निर्माण करें, जहां कोई भी सपना और लक्ष्य असंभव ना हो। तभी जाकर हम सही मायने में एक समावेशी और विकसित भारत का निर्माण कर पाएंगे।

टिकाऊ हल की तलाश

प्रदूषण से भारत की छवि को नुकसान पहुंचा है। दिल्ली में हर साल औसतन 275 दिन खराब हवा दर्ज की जाती है। ये मुश्किलें स्पष्ट हैं। फिर भी टिकाऊ हल की तलाश का कोई गंभीर प्रयास होते हम नहीं देख रहे हैं। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में छाया जहरीला धुआं इस महीने की प्रमुख खबरों में रहा है। इस बीच यह जिक्र भी हुआ है कि एनसीआर की बदहाली तो फिर भी सुर्खियों में आ जाती है, लेकिन देश के बहुत-से शहरों के प्रदूषण पर शायद ही कभी ध्यान जाता है, जबकि वहां हाल किसी रूप में बेहतर नहीं है। फिर प्रदूषण पर चर्चा अक्सर स्वास्थ्य के नजरिए से होती है- जबकि अर्थव्यवस्था पर होने वाले खराब असर पर अक्सर बात नहीं होती। जबकि हकीकत यह है कि इसका अर्थव्यवस्था पर भी भारी असर हो रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार प्रदूषण से हर साल देश की जीडीपी के लगभग तीन प्रतिशत हिस्से का का नुकसान हुआ है। डलबर्ग नाम की ग्लोबल कंसल्टेंसी फर्म ने यह अनुमान लगाया था।

बेशक प्रदूषण के नुकसान को पैसों में नहीं तोला जा सकता। फिर भी इसकी आर्थिक कीमत भी बहुत महंगी है, यह साफ है। सघन प्रदूषण के समय दफ्तरों का बंद होना, स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारण लोगों का काम पर ना जा पाना, बीमारियों के इलाज, समय से पहले मौत, और इन सबके परिवारों पर पडने वाले असर की कीमत बेहद महंगी है। बाजार विशेषज्ञों की राय में प्रदूषण का उपभोक्ता अर्थव्यवस्था पर भी असर पड़ा है। इसकी वजह से इस सीजन में लोग बाजारों और रेस्तराओं में कम जाते हैं।

दिल्ली पर गौर करें, तो जो इस समस्या के कारण राष्ट्रीय राजधानी को अपनी जीडीपी के छह फीसदी हिस्से का नुकसान हर साल हो रहा है। तजुर्बा यह है कि सेहत को लेकर सजग लोग बाहर निकलने से बचते हैं, जिससे व्यापार प्रभावित होता है। पर्यटन उद्योग पर भी इसका असर पड़ा है। सर्दियों के मौसम में ज्यादातर विदेशी पर्यटक भारत आते रहे हैं। लेकिन अब धुंध की वजह से वे अपना प्रोग्राम टाल देते हैं। इंडियन एसोसिएशन ऑफ टूअर ऑपरेटर्स के मुताबिक प्रदूषण से भारत की छवि को नुकसान पहुंचा है। दिल्ली में हर साल औसतन 275 दिन खराब हवा दर्ज की जाती है। ये मुश्किलें स्पष्ट हैं। फिर भी टिकाऊ हल की तलाश का कोई गंभीर प्रयास होते हम नहीं देख रहे हैं।

(आरएनएस)

नजरिया

भारतीय संविधान में कलात्मकता

हमारा भारत देश संस्कृति और ऐतिहासिक विरासत का एक जीता जागता अनुभव है। इसके इतिहास को सरल शब्दों में व्यक्त करना अत्यंत कठिन है। इससे भी अधिक कठिन है पांच हजार से अधिक वर्षों की सभ्यता के इतिहास को एक दस्तावेज के रूप में व्यक्त करना, जो देश की स्वतंत्रता के समय एक नए स्वतंत्र हुए राष्ट्र के भाग्य का मार्गदर्शन करने वाला हो। लेकिन आचार्य नंदलाल बोस केवल एक कलाकार नहीं थे और भारत के संविधान पर चित्रण उनके लिये केवल एक और कार्य नहीं था। संविधान में चित्रण के लिए उनकी दृष्टि हड़प्पा सभ्यता के समय से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति के समय तक भारत की यात्रा का वर्णन करती है।

गजेंद्र सिंह शेखावत, केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री, भारत सरकार

यह सभी चित्रण संविधान के अंतिम पृष्ठ पर सूचीबद्ध हैं और उन्हें बारह ऐतिहासिक काल में वर्गीकृत किया गया है: मोहनजोदड़ो काल, वैदिक काल, महाकाव्य काल, महाजनपद और नंद काल, मौर्य काल, गुप्त काल, मध्यकालीन काल, मुस्लिम काल, ब्रिटिश काल, भारत का स्वतंत्रता आंदोलन, स्वतंत्रता के लिए क्रांतिकारी आंदोलन और प्राकृतिक विशेषताएँ। संविधान की शुरुआत हमारे राष्ट्रीय प्रतीक के चित्रण से होती है। नंदलाल बोस इस बात को लेकर बहुत स्पष्ट थे कि प्रतीक में शेर बिल्कुल असली शेरों की तरह दिखें, उनकी चाल और चेहरे के हाव-भाव सही हों और आयु के हिसाब से उनमें बदलाव हो। राष्ट्रीय प्रतीक के डिजाइनर दीनानाथ भार्गव, जो उस समय कला भवन में एक युवा छात्र थे, इस कलाकृति को चित्रित करने से पहले शेरों के हाव-भाव, शारीरिक भाषा और तौर-तरीकों का अध्ययन करने के लिए महीनों तक कोलकाता चिड़ियाघर गए। प्रस्तावना पृष्ठ और कई अन्य पृष्ठों को बेहर राममनोहर सिन्हा ने डिजाइन किया था। नंदलाल बोस ने बिना किसी बदलाव के प्रस्तावना हेतु सिन्हा जी की बनाई कलाकृति का समर्थन किया। इस पृष्ठ पर निचले दाएं कोने में देवनागरी में सिन्हा का संक्षिप्त हस्ताक्षर राम है।

संविधान की प्रस्तावना एक हाथ से लिखा हुआ लेख है जो आयताकार बॉर्डर से घिरा हुआ है। बॉर्डर के चार कोनों में चार पशुओं को दर्शाया गया है। दर्शाए गए चार जानवर भारत के राष्ट्रीय प्रतीक के आधार से लिए गए हैं। बॉर्डर की कलाकृति में कमल की आकृति प्रमुखता से दिखाई देती है। कमल की आकृति बॉर्डर कलाकृति में प्रमुखता से दिखाई देती है। संविधान का प्रत्येक भाग एक चित्र से आरंभ होता है और अलग-अलग पृष्ठों पर अलग-अलग बॉर्डर डिज़ाइन दर्शाए गए हैं। कलाकारों के हस्ताक्षर चित्र पर और बॉर्डर के पास दिखाई देते हैं जो इस प्रोजेक्ट में सभी के सहयोग को दर्शाता है। अनेक पृष्ठों पर कई हस्ताक्षर हैं जो बंगाली, हिंदी, तमिल और अंग्रेजी में दिखाई देते हैं। भारत के संविधान के भाग 19 में विविध विषयों से संबंधित एक चित्र है जिसमें नेताजी सैन्य पोशाक में अपने सैनिकों से घिरे हुए सलामी दे रहे हैं। नंदलाल बोस के हस्ताक्षर चित्रण पर दिखाई देते हैं और ए. पेरुमल के हस्ताक्षर पृष्ठ के बाएं निचले कोने पर दिखाई देते हैं। वे कला को लोगों तक ले जाने वाले कलाकार के रूप में प्रसिद्ध हुए। वे शांतिनिकेतन के गाँवों में जाते और संथाल घरों की दीवारों को जानवरों, पक्षियों और पेड़ों वाली प्रकृति की थीम से सजाते। वे शांतिनिकेतन के कला भवन में चार दशकों से अधिक समय तक नंदलाल बोस जैसे महान कलाकारों के साथ रहे और काम किया, उन्हें स्नेह से पेरुमलदा कहा जाता था।

संविधान का भाग 4, जो प्रथम अनुसूची के भाग में राज्यों से संबंधित है, वह ध्यान में बैठे भगवान महावीर की समृद्ध रंगीन चित्र से शुरू होता है, जिसमें वे अपनी आँखें बंद करके और हथेलियाँ एक दूसरे पर टिकाकर बैठे हुए हैं। भगवान महावीर के दोनों ओर एक-एक पेड़ हैं और फ्रेम में एक मोर भी दिखाई दे रहा है जो प्रकृति में सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व को दर्शाता है। यह मूल संविधान के कुछ रंगीन चित्रों में से एक है। रंगीन चित्रों में जमुना सेन और नंदलाल बोस के हस्ताक्षर हैं। इस पृष्ठ पर बॉर्डर डिज़ाइन में राजनीति नामक कलाकार के हस्ताक्षर भी हैं।

भारतीय संविधान का भाग 15 चुनावों पर केंद्रित है। इस पृष्ठ पर दिए गए चित्रों में भारत के दो वीर सपूत छत्रपति शिवाजी महाराज और गुरु गोविंद सिंह को दिखाया गया है। इस पृष्ठ पर दिए गए चित्र धीरेंद्र कृष्ण देब बर्मन द्वारा बनाए गए हैं, जो त्रिपुरा राजघराने के सदस्य थे और रवींद्रनाथ टैगोर और नंदलाल बोस के साथ उनके घनिष्ठ संबंध थे। बॉर्डर डिज़ाइन पर कृपाल सिंह शेखावत के हस्ताक्षर हैं, जो भारत के एक प्रसिद्ध कलाकार और मिट्टी के बर्तन बनाने वाले थे, जिन्हें जयपुर की प्रतिष्ठित ब्लू पॉटरी की कला को पुनर्जीवित करने के लिए जाना जाता है।

शांतिनिकेतन में ललित कला संस्थान कला भवन ने भारत और दुनिया के सभी कोनों से छात्रों और कलाकारों को आकर्षित किया, इस प्रकार विभिन्न प्रभावों को समाहित करते हुए उत्कृष्टता की निरंतर खोज करते हुए एक इकोसिस्टम निर्मित किया और अंत में, एक अनूठी भारतीय शैली और कला निर्मित की। इस पर काम करने वाले कई कलाकारों ने अपने करियर में महान ऊंचाइयों को हासिल किया, लेकिन इस परियोजना के समय शांतिनिकेतन के छात्र और सहयोगी ही थे जो अपने श्रद्धेय 'मास्टर मोशाय' नंदलाल बोस के सपने को जीवंत करने के लिए प्रयत्नशील थे। संविधान में चित्रों की प्रेरणा भारत के विशाल इतिहास, भौतिक परिदृश्य, पौराणिक चित्र और स्वतंत्रता संग्राम में निहित है। भारत के संविधान का भाग 13 'भारतीय क्षेत्र में व्यापार, वाणिज्य और उनके परस्पर संबंधो' से संबंधित है। इस पृष्ठ पर दिया गया चित्रण महाबिलापुरम में स्मारकों के समूह का हिस्सा है जो यूनेस्को द्वारा अंकित विश्व धरोहर स्थल है। 'गंगा का अवतरण' एक बड़ी, खुली हवा में बनी चट्टान की नक्काशी वाली मूर्ति है जो स्वर्ग से धरती पर गंगा नदी के उतरने के कथा को पत्थर में दर्शाती है। नंदलाल बोस के हस्ताक्षर चित्र पर दिखाई देते हैं और जमुना सेन का नाम बॉर्डर के बाएं निचले कोने पर दिखाई देता है।

भाग 3 जो मौलिक अधिकारों से संबंधित है, उसमें रामायण का एक दृश्य दिखाया गया है। इस पृष्ठ के बॉर्डर पर जमुना सेन के हस्ताक्षर हैं। भाग 4 जो राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांतों से संबंधित है, उसमें महाभारत का एक दृश्य दिखाया गया है। बानी पटेल और नंदलाल बोस के नाम दाईं ओर नीचे दिए गए चित्रण पर दिखाई देते हैं और विनायक शिवराम मसोजी का नाम बॉर्डर के बाएं कोने पर दिखाई देता है। संविधान का भाग 7 'पहली अनुसूची के भाग बी में शामिल राज्यों' से संबंधित है। इस खंड की शुरुआत में दिए गए चित्रण में सम्राट अशोक द्वारा बौद्ध धर्म के प्रसार को दर्शाया गया है। उन्हें हाथी पर सवार दिखाया गया है, जो सभी तरह के साज-सज्जा से सुसज्जित है और बौद्ध भिक्षुओं से घिरा हुआ है। यह चित्रण अजंता की शैली में है, जिसमें भिक्षुओं को शरीर के ऊपरी हिस्से को बिना वस्त्रों और आभूषणों के साथ दिखाया गया है। यह चित्रण नंदलाल बोस द्वारा किया गया था, जिनका काम अजंता भितिचित्रों में पाई जाने वाली कलात्मक परंपराओं से बहुत प्रभावित था। चित्रण के निचले बाएँ भाग पर ए. पेरुमल का नाम भी दिखाई देता है। बॉर्डर डिज़ाइन में ब्योहर राममनोहर सिन्हा के हस्ताक्षर हैं, जिन्होंने प्रस्तावना और कई अन्य पृष्ठों को भी डिज़ाइन किया था। यहाँ उन्होंने हिंदी में राममनोहर के रूप में हस्ताक्षर किए हैं। यह संविधान के उन कुछ पन्नों में से एक है, जिस पर नंदलाल बोस और उनके सबसे वरिष्ठ छात्र ब्योहर राममनोहर सिन्हा दोनों के नाम हैं।

भारत का संविधान इस मायने में अनूठा है कि यह मूल रूप से एक हस्तलिखित दस्तावेज़ था। इसे अंग्रेजी में प्रेम बिहारी रायज़ादा और हिंदी में वसंत के. वैद्य ने सुलेखित किया था। रायज़ादा ने प्रवाहपूर्ण इटैलिक शैली का इस्तेमाल किया और सुलेख की कला अपने दादा से सीखी। संविधान हॉल (जिसे अब कॉन्स्टिट्यूशन क्लब ऑफ़ इंडिया के नाम से जाना जाता है) के एक कमरे में काम करते हुए, उन्होंने छह महीने के दौरान दस्तावेज़ तैयार किया। उन्होंने इसे लिखते समय सैकड़ों पेन निब का इस्तेमाल किया। भारत के संविधान के अंग्रेजी संस्करण के सुलेखक प्रेम बिहारी नारायण रायज़ादा (प्रेम) के हस्ताक्षर दस्तावेज़ के हर पृष्ठ पर दिखाई देते हैं। राष्ट्रीय महत्व की इस परियोजना को शुरू करने के लिए उन्होंने यही एकमात्र अनुरोध किया था।

भारत का संविधान एक मौलिक कला ग्रंथ है जो समय की कसौटी पर खरा उतरा है। भारतीय संविधान में कलात्मकता भारत के बहुस्तरीय इतिहास को दर्शाती है और सामाजिक सांस्कृतिक, पौराणिक, क्षेत्रीय, आध्यात्मिक, भौतिक परिदृश्य तथा अन्य कारकों के प्रति श्रद्धांजलि है जो भारत को एक अद्वितीय और जीवंत अनुभव बनाते हैं। यह एक ऐसे राष्ट्र की वास्तविकता को दर्शाता है जो अपने प्राचीन अतीत को स्वीकार करता है, विविधता में एकता का उत्सव मनाता है और भविष्य की ओर देखता है।

(ये लेखक के विचार हैं)

अमेरिका का भविष्य सवालों में घिरा

डॉ. ब्रह्मदीप अलूने

ऐतिहासिक राजनीतिक वापसी के बाद आत्मविश्वास से भरे डोनाल्ड ट्रंप अमेरिका फर्स्ट योजना को साकार करने को संकल्पित हैं। ट्रंप ने जिन सहयोगियों को अपनी कैबिनेट का हिस्सा बनाया है, उससे भविष्य के अमेरिका की बदली हुई और नई छवि उभर कर आने के संकेत मिल रहे हैं।

हालांकि आशाओं और आकांक्षाओं से भरपूर ट्रंप की कैबिनेट को लेकर आशंकाएं भी कम नहीं हैं। ट्रंप आर्थिक सहयोग पर आधारित रणनीतिक भागीदारियों को अमेरिकन जनता के पैसों का दुरुपयोग समझते हैं, और इन्हें गैर-जरूरी बताते हैं। ट्रंप ने नाटो में अमेरिकी भागीदारी पर पुनर्विचार करने और कुछ अंतरराष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं को कम करने का सुझाव दिया है।

ट्रंप ने मार्को रूबियो को विदेश मंत्री बनाया है। रूबियो ने अमेरिका फर्स्ट दृष्टिकोण के साथ ही वैश्विक मंच पर अमेरिका का सम्मान पुन: हासिल करने का वादा किया है। वे चीन, ईरान और क्यूबा सहित अमेरिकी भू-राजनीतिक दुश्मनों के संबंध में सशक्त विदेश नीति की वकालत करते हैं। भारत के लिए उनके विचार बेहद सकारात्मक हैं, जो अमेरिकी विदेश नीति में आमूलचूल परिवर्तन करते हुए भारत को जापान, इस्त्राइल, दक्षिण कोरिया और नाटो के समकक्ष रखने की बात कहते हैं। रूबियो पाकिस्तान की आतंकवाद को बढ़ावा देने की कोशिश के चलते उसे दी जाने वाली सुरक्षा सहायता रोकने के हिमायती हैं। रूबियो इस्त्राइल को मदद बढ़ा कर ईरान को सबक सिखाने के हिमायती हैं। इसका असर मध्यपूर्व में देखने को मिल सकता है।

ट्रंप ने अरकंसास के पूर्व गवर्नर माइक हकबी को इस्त्राइल में अमेरिकी राजदूत के रूप में नामित किया है। हकाबी इस्त्राइल के कट्टर समर्थक हैं, और कब्जे वाले पश्चिमी तट पर इस्त्राइली बस्तियों के रक्षक हैं, जिन्हें अधिकांशत: अंतरराष्ट्रीय समुदाय द्वारा अवैध माना जाता है। इस्लामिक ऑर्गेनाइजेशन के सऊदी अरब, कतर, संयुक्त अरब अमीरात और बेहरीन जैसे अमेरिका के रणनीतिक सहयोगी ईरान पर इस्त्राइल के हमलों की आलोचना कर चुके हैं। यूएई ने इस्लामिक ऑर्गेनाइजेशन के सम्मेलन में कहा था कि ट्रंप प्रशासन के साथ एक व्यापक दृष्टिकोण रखने की जरूरत है, प्रतिक्रियावादी और टुकड़े-टुकड़े वाली नीति से काम नहीं चलेगा। इन स्थितियों में नये विदेश मंत्री और अमेरिकी राजदूत माइक हकबी के सामने मध्यपूर्व में अमेरिकी हितों की रक्षा के लिए संतुलन बनाने की बड़ी चुनौती होगी।

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार पद के लिए ट्रंप ने माइक वाल्ट्ज पर भरोसा जताया है। वाल्ट्ज ने नेशनल गार्ड में कर्नल के रूप में भी काम किया है, उन्होंने एशिया प्रशांत क्षेत्र में चीनी गतिविधियों की आलोचना की है, और इस क्षेत्र में संभावित संघर्ष के लिए अमेरिका को तैयार रहने की आवश्यकता पर जोर दिया है। अमेरिका की वैदेशिक नीति के प्रतिनिधित्व में चीन का विरोध दिखाई पड़ रहा है। मतलब साफ है चीन और अमेरिका के बीच प्रतिद्वंद्विता बढ़ेगी तो दोनों देशों के बीच तनाव भी बढ़ेगा।

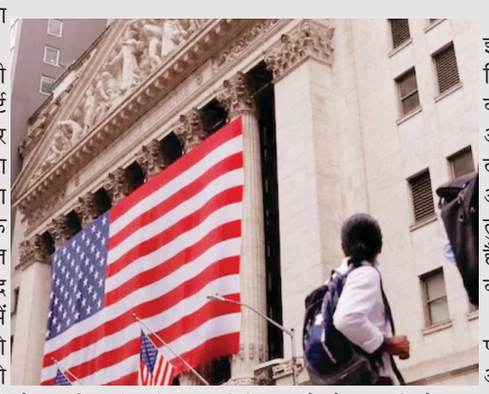

चीन हांगकांग पर प्रतिक्रिया को लेकर रूबियो से पहले ही चिढ़ा हुआ है, और उन पर कई प्रतिबंध लगा चुका है।

ट्रंप ने लाखों अप्रवासियों को लक्षित करते हुए अब तक का सबसे व्यापक निर्वासन प्रयास शुरू करने की कसम खाई है। अप्रवासन को रोकने के लिए वे किसी भी हद तक जाने की बात कह चूके हैं। लिहाजा, उन्होंने यह जिम्मा क्रिस्टी नोएम को सौंपा है। ट्रंप ने नोएम को अगले गृह सुरक्षा सचिव के रूप में चुना है, वे होमलैंड सुरक्षा विभाग, सीमा सुरक्षा और आव्रजन से लेकर आपदा प्रतिक्रिया और अमेरिकी सीक्रेट सर्विस तक हर चीज के लिए जिम्मेदार हैं। होमन देश की सीमाओं के भी प्रभारी होंगे। होमन अवैध आप्रवासियों को वापस भेजने को लेकर दृढ़ हैं। अप्रवासन को लेकर अमेरिका की कड़ी नीतियों से उसके संबंध लैटिन अमेरिका, मध्य एशिया और भारत से खराब हो सकते हैं। इसका असर अमेरिकी अर्थव्यवस्था और रणनीतिक भागीदारियों पर भी पड़ सकता है। सीआईए प्रमुख के रूप में पूर्व अमेरिकी जासूस जॉन रैटिक्लफ ट्रंप की पसंद हैं। वे ट्रंप के वफादार समर्थक रहे हैं, और उन्हें खुफिया और राष्ट्रीय सुरक्षा पर उनके काम के लिए जाना जाता है। रैटिक्लफ ने खुफिया मामलों पर ट्रंप के शीर्ष सलाहकार के रूप में काम किया है, और ट्रंप के एजेंडे को बढ़ाने में भूमिका निभाई है। रैटिक्लफ ने अमेरिकी चुनावों में विदेशी हस्तक्षेप के प्रयासों को उजागर किया है तथा वे ईरान, चीन और रूस के मुखर आलोचक माने जाते हैं। अमेरिका और यूरोप के बीच बढ़तीं दूरियां, रूस-यूक्रेन युद्ध और मध्यपूर्व में अमेरिकी सैन्य अड्डों पर हमलों की आशंकाओं के बीच रैटिक्लफ अमेरिकी खुफिया परिदृश्य को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

ट्रंप ने सांसद तुलसी गबार्ड को नेशनल इंटेलिजेंस का डायरेक्टर नामित किया है। यह विभाग अमेरिका में सारी खुफिया एजेंसियों का काम देखता है। तुलसी पाकिस्तान की आलोचक रही हैं। ट्रंप ने चुनाव प्रचार के दौरान बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर अत्याचारों की आलोचना की थी, ऐसे में तुलसी बांग्लादेश को लेकर सख्त हो सकती हैं, और इसका फायदा निर्वासित शेख हसीना को मिल सकता है।

ट्रंप ने अमेरिका की प्रशासनिक व्यवस्था पर शिंकजा कसने की जिम्मेदारी एलन मस्क और विवेक रामास्वामी को सौंपी है। रामास्वामी एफबीआई की आलोचना करते रहे हैं। अमेरिका में संघीय एजेंसियों को बदलने की कोशिशें कांग्रेस में व्यापक आलोचना का कारण बन सकती हैं, और यह सीआईए के लिए भी स्वीकार्य नहीं होगा। ट्रंप की नीतियों और मंशा पर वहां की खुफिया एजेंसियां पहले ही सवाल उठा चुकी हैं। इससे देश में अभूतपूर्व टकराव बढ़ सकता है।

अमेरिका में कैबिनेट की स्थिति दुनिया की अन्य शासन व्यवस्थाओं से बहुत अलग और खास है। दुनिया के इस सबसे शक्तिशाली देश में कैबिनेट के सदस्य संसद के किसी सदन के सदस्य नहीं होते और न ही सदन के प्रति उनका कोई उत्तरदायित्व होता है। वे मात्र राष्ट्रपति के प्रति उत्तरदायी होते हैं। जाहिर है, ट्रंप की कैबिनेट उनके लिए तो मुफीद है लेकिन आक्रामकता से भरपूर राजनीतिक समूह के चलते अमेरिका का भविष्य सवालों में घिर गया है।

(ये लेखक के विचार हैं)

झगड़े खत्म हो जाने चाहिए

जब तक उपासना स्थल अधिनियम अस्तित्व में है, हर पूजा स्थल की 15 अगस्त 1947 को जो स्थिति थी, उसमें कोई बदलाव नहीं किया जा सकता। वह कानून अस्तित्व में रहे, और उसका खुलेआम उल्लंघन भी हो, यह कतई उचित नहीं है।

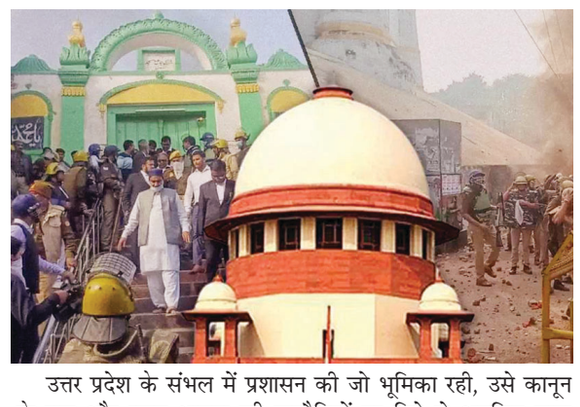

उत्तर प्रदेश के संभल में प्रशासन की जो भूमिका रही, उसे कानून के राज और न्याय भावना की कसौटियों पर सिरे से अनुचित माना जाएगा। पहली बात, जब तक उपासना स्थल अधिनियम अस्तित्व में है, हर पूजा स्थल की 15 अगस्त 1947 को जो स्थिति थी, उसमें कोई बदलाव नहीं किया जा सकता। वह कानून अस्तित्व में रहे, और उसका खुलेआम उल्लंघन भी होता रहे, तो यही कहा जाएगा कि देश में कानून और संविधान का कोई मूल्य नहीं रह गया है। ना ही सुप्रीम कोर्ट की इस भावना की कोई कदर होती दिख रही है कि अयोध्या विवाद के हल होने के बाद अब मंदिर-मस्जिद के झगड़े खत्म हो जाने चाहिए।

फिर भी पूजा स्थलों के स्थिति में परिवर्तन करना अगर सत्ता पक्ष का एजेंडा है, तो उसे पहले संसद से इस अधिनियम को रद्द करवा देना चाहिए! जहां तक संभल की बात है, तो वहां कोर्ट ने बिना दूसरे पक्ष को सुने एक मस्जिद के सर्वे का आदेश दिया। कोई याचिका आई थी, तो क्या उचित नहीं होता कि अदालत पहले दूसरे संबंधित पक्ष को नोटिस जारी कर उसका जवाब मांगती? फिर प्रशासन ने इतना उत्साह दिखाया कि कोर्ट का आदेश आने के कुछ घंटों के अंदर ही सर्वे शुरू कर दिया। हैरतअंगेज है कि एक सर्वे होने के बाद फिर दूसरे सर्वे के लिए टीम गई। उसी समय पुलिस और दूसरे पक्ष की भीड़ में टकराव हुआ। तब फायरिंग में चार लोग मारे गए।

सत्ताधारी नेताओं के सामने सवाल है कि वे भारत को कहां ले जाना चाहते हैं? क्या वे देश को सतत सांप्रदायिक उथल-पुथल में धकेल देना चाहते हैं? भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को अपना मातृ संगठन मानती है। संघ प्रमुख मोहन भागवत ने 2022 में कहा था कि हर मस्जिद के नीचे शिवलिंग ढूंढने की प्रवृत्ति छोड़ी जानी चाहिए। भाजपा इस पर भी गौर करती, तो उसकी सरकारें पूजा स्थलों को लेकर नए-नए विवाद खड़ा करने की फैलती जा रही प्रवृत्ति पर रोक लगाने के लिए कारगर कदम उठातीं। लेकिन धारणा इसके उलट बनती जा रही है। इस पर पार्टी नेतृत्व को अविलंब आत्म-निरीक्षण करना चाहिए।

(आरएनएस)

श्रीकंचनपथ

भिलाई-दुर्ग

ITR फाईल बनवाएं मात्र 499/-

• TDS रिफंड • GST रजिस्ट्रेशन • इनकम TAX फाइल
• प्रोजेक्ट रिपोर्ट • MSME रजिस्ट्रेशन • GST रिटर्न फाइल
• CMA DATE • फूड लाइसेंस • BALANCE SHEET

हमारे TAX EXPERT आपकी मदद हेतु तैयार हैं

संपर्क : शेखर गुप्ता, मो. 93007-55544, 8878655544
D-6 सेक्टर-2, गुरुद्वारा के सामने देवेन्द्र नगर रायपुर

खास खबर

जिला पंचायत सीईओ ने पीएम आवास योजना के कार्यों एवं शिविर का किया निरीक्षण

दुर्ग। कलेक्टर ऋचा प्रकाश चौधरी के निर्देशानुसार जिला पंचायत दुर्ग के मुख्य कार्यपालन अधिकारी बजरंग कुमार दुबे ने विभिन्न ग्राम पंचायतों में पीएम आवास योजना, मनरेगा एवं आयुष्मान कार्ड शिविर का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान ग्राम पंचायत पिटौरा एवं ग्राम पंचायत नंदिनीखुदनी में उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना एवं मनरेगा के निर्माण कार्यों का अवलोकन किया। इस दौरान ग्राम पंचायत पिटौरा की हितग्राही निर्मला बाई एवं अश्वनी बाई से निर्माण कार्यों की प्रगति के बारे में चर्चा की। सीईओ दुबे ने हितग्राहियों से योजना अंतर्गत शासन द्वारा प्राप्त अनुदान राशि के बारे में भी जानकारी ली। उन्होंने आयुष्मान कार्ड शिविर का भी निरीक्षण किया। इसके अलावा सीईओ श्री दुबे ने ग्राम पंचायत नंदिनी खुंदनी के वनमण्डल विभाग में नर्सरी उत्पादन के कार्य का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान मुख्य कार्यपालन अधिकारी किरण कौशिक एवं मनरेगा के कार्यक्रम अधिकारी उपस्थित थे। सीईओ दुबे ने दुर्ग ब्लॉक अंतर्गत ग्राम पंचायत बेलौदी और आस पास के क्षेत्रों का भ्रमण कर ग्राम पंचायत के पीएमएवाय हितग्राहियों से चर्चा की और ऐसे हितग्राही जिनका आवास निर्माण कार्य अप्रारंभ है, उन्हे निर्धारित समय में निर्माण कार्य प्रारंभ होने का आश्वासन दिया।

भिलाई इस्पात संयंत्र ने सड़क सुरक्षा के लिए सीसीटीवी कैमरे हेतु 1 करोड़ रूपये शासन को दिए

भिलाई। बीएसपी के निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व विभाग की ओर से आज 06 दिसम्बर 2024 को मुख्य महाप्रबंधकउत्पल दत्ता ने एडिशनल एसपी दुर्ग अभिषेक झा की उपस्थिति में जिलाधीष, दुर्ग ऋचा प्रकाश चौधरी को 1 करोड़ रूपये का चेक दुर्ग जिले में सड़क सुरक्षा के लिए सीसीटीवी कैमरे लगाने हेतु सौंपा। इस अवसर पर भिलाई इस्पात संयंत्र से सहायक महाप्रबधंक आर गर्ग, वरिष्ठ प्रबधंक सुशील कामड़े उपस्थित थे। भिलाई इस्पात संयंत्र ने पुलिस प्रषासन के अनुरोध पर यह राषि प्रदान की है। दुर्ग जिले में सड़क सुरक्षा और कानून व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए सीसीटीवी कैमरे लगाने की एक योजना प्रस्तावित है। इस योजना में सहयोग करने हेतु पुलिस प्रषासन ने भिलाई इस्पात संयंत्र से सहयोग की अपेक्षा की थी। इसे ध्यान में रखते हुए भिलाई इस्पात संयंत्र के निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व विभाग की ओर से उपरोक्त राषि का चेक प्रदान किया गया।

इंडियन रेडक्रास सोसायटी दुर्ग के सामान्य सभा की बैठक 26 दिसम्बर को

दुर्ग। इंडियन रेडक्रास सोसायटी, जिला शाखा दुर्ग की जिला प्रबंध समिति 2024-27 वर्ष का गठन किया जाना है। इस हेतु इंडियन रेडक्रास सोसायटी जिला शाखा दुर्ग के सामान्य सभा की बैठक 26 दिसम्बर 2024 को अपरान्ह 2 बजे खालसा पब्लिक स्कूल दुर्ग (मालवीय नगर चौक के पास सभागार) में आयोजित की गई है।

भिलाई की सड़कों के चौड़ीकरण व उन्नयन का कार्य प्रगति पर

श्रीकंचनपथ न्यूज

भिलाई। सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र के नगर सेवाएं विभाग द्वारा इस्पात नगरी के जनसामान्य हेतु आवागमन को अधिक सुविधाजनक और सुरक्षित बनाने हेतु पार्किंग, सड़क चैड़ीकरण, चैकों का उन्नयन एवं नवीनीकरण कार्य वृहद पैमाने पर किया जा रहा है। सड़कों के चैड़ीकरण से नगरवासियों को जहां आवागमन में और अधिक सुविधा मिलेगी वहीं, दूसरी ओर खराब सड़कों के कारण संभावित दुर्घटना में भी कमी आएगी।

भिलाई इस्पात संयंत्र अपने इस्पात नगरी भिलाई के नागरिकों के हित में आवागमन को अधिक सुविधाजनक बनाने तथा सड़क सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए टाउनशिप की सड़कों का चैड़ीकरण कर रही है। इन सड़कों के चैड़ीकरण की मांग काफी लंबे समय से की जा रही थी। इसे ध्यान में रखते हुए इस्पात नगरी की लगभग सभी सड़कों के उन्नयन का कार्य किया जा रहा है। टाउनशिप में कुल 580 किलोमीटर की सड़कों की देखरेख एवं मरम्मत का कार्य भिलाई इस्पात संयंत्र के नगर सेवाएं विभाग द्वारा किया जाता है। वर्ष 2023-24 में अब तक कुल 2 लाख वर्ग मीटर सड़क की रिकार्पेटिंग का कार्य नगर सेवाएं विभाग द्वारा किया जा चुका है। इसमें पं. रविशंकर शुक्ल मार्ग, सेकटर-6 की क्रास स्ट्रीट सड़कों का कार्य किया जा चुका है इसके तहत मिराज सिनेमा से सेंट्रल एवेन्यू तक की रोड नम्बर 4, नेहरु नगर फ्लाई ओवर से सेक्टर 08 चैक होते हुए पंथी चैक तक एवं 32 बंगला से तालपुरी चैक तक सड़क का चैड़ीकरण का कार्य प्रगति पर है।

भारी ट्रकों की आवाजाही के कारणवश खराब हो चुके संयंत्र की रोलिंग मिल गेट, खुर्सीपार से रोलिंग मिल जाने वाली सड़क के जीर्णोधार का काम हाल ही में नगर सेवाएं विभाग द्वारा पूरा किया गया है। भिलाई टाउनशिप की मुख्य सड़कों में से एक सेन्ट्रल एवेन्यू की रिकार्पेटिंग का काम पूरा किया जा चुका है। पं. रविशंकर शुक्ल मार्ग जिसे सेंट्रल एवेन्यू मार्ग के नाम से भी जाना जाता है की लेन मार्किंग का कार्य प्रगति पर है और शीघ्र ही पूरा हो जाएगा। चूँकि सेन्ट्रल एवेन्यू भिलाई इस्पात संयंत्र की मुख्य पहुंच सड़क है, अत: कर्मचारियों की आवाजाही के कारण इस मार्ग में यातायात एवं सड़क सुरक्षा एक महत्वपूर्ण पहलू है, इसे ध्यान में रखते हुए बिना किसी दुर्घटना के सड़क यातायात व्यवस्थित बनाएं रखने के लिए सड़क पर लेन मार्किंग की जा रही हैं। भिलाई इस्पात संयंत्र के मेन गेट के सामने के चैराहे, जिसमें भारत और सोवियत संघ की मित्रता और सहयोग के स्मारक-स्तंभ स्थापित है उस सड़क के उन्नयन का कार्य किया गया है। साथ ही रोड मार्किंग का कार्य भी किया गया है। यहाँ शिफ्ट के समय दुपहिया एवं चारपहिया वाहनों की आवाजाही के कारण अधिक दबाव रहता है, इसे ध्यान में रखते हुए भिलाई इस्पात संयंत्र प्रबंधन द्वारा इस चैराहे का सौंदर्यीकरण एवं उन्नयन समेत सड़क की मजबूती हेतु दोहरी रिकार्पेटिंग का काम किया गया है। साथ ही 30 एमएलडी ट्रीटमेंट प्लांट के समीप के चैक, इक्यूपमेंट चैक पर सड़क रिकार्पेटिंग एवं रिपेयरिंग का कार्य पूरा हो चुका है। इक्यूपमेंट चैक फ्लाई ओवर से बोरिया चैक तक की सड़क, जहां भारी ट्रकों की आवाजाही के कारण लगातार क्षति होती रही है, की रिकार्पेटिंग एवं रिपेयरिंग की योजना है। भारी वाहनों की पार्किंग हेतु बोरिया चैक के समीप चाइना मार्केट के पास एक बड़ी पार्किंग का निर्माण भी भिलाई इस्पात संयंत्र के नगर सेवाएं विभाग द्वारा पूर्व में किया जा चुका है। साथ ही फॉरेस्ट एवेन्यू में डिवाइडर निर्माण के साथ-साथ सेन्ट्रल एवेन्यू से सेक्टर 06 मार्केट तक की सड़क के मरम्मत की योजना भी प्रस्तावित है। इस पर भी कार्य किया जायेगा। भारी वाहनों की निरन्तर आवाजाही एवं शिफ्ट के समय यातायात पर दबाव के कारण टाउनशिप की इन सड़कों पर हमेशा भार की स्थिति बनी रहती है, इसलिए इन सड़कों की मरम्मत एवं जीर्णोद्धार का कार्य नई तकनीक के अनुसार किया जा रहा हैं।

डॉ अंबेडकर के अनुयायियों ने किया 175 यूनिट रक्तदान

श्रीकंचनपथ न्यूज

भिलाई। डॉ बाबासाहेब अंबेडकर महापरिनिर्वाण दिवस 6 दिसंबर के अवसर पर शुक्रवार को दुर्ग भिलाई के अंबेडकर अनुयायियों ने दुर्ग सरकारी अस्पताल में 175 यूनिट ब्लड दान किया। पंचशील बौद्ध विहार दुर्ग में समता सुरक्षा सेना छत्तीसगढ़ और अंबेडकर नगर निवासी विकास समिति उरला दुर्ग द्वारा पंचशील बौद्ध विहार के नवनिर्मित भवन में रक्तदान कैंप लगाया गया था।

डॉ अंबेडकर सांस्कृतिक भवन सेक्टर-6 भिलाई में भारतीय बौद्ध महासभा 1119 तथा महा मानव मल्टीपरपज सोसायटी द्वारा ब्लड डोनेशन कैंप लगाया गया था। कुछ रक्तदाताओं ने सीधे सरकारी अस्पताल के ब्लड बैंक में जाकर भी आज ब्लड डोनेट कर डॉ. अम्बेडकर को आदरांजलि दी।

भारतीय संविधान के निर्माता डॉ बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर के मानवतावादी कार्यों को याद कर संपूर्ण मानव समाज के हित के लिए ब्लड डोनेशन का कार्य किया गया। इस अवसर पर वक्ताओं ने बाबासाहेब के द्वारा किये सामाजिक ,आर्थिक और राजनीतिक सुधार के कार्यों का उल्लेख कर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि दी। उल्लेखनीय है कि समता सुरक्षा सेना छत्तीसगढ़ की ओर से विगत 3 वर्षों से रक्तदान शिविर का आयोजन बाबा साहेब के महापरिनिर्वाण दिवस पर किया जा रहा है। रक्तदान शिविर के उपरांत शाम के समय कैंडल रैली निकाली गई।

इस आयोजन को सफल बनाने में ब्लड बैंक अधिकारी प्रवीण अग्रवाल की पूरी टीम ने अपना पूरा सहयोग दिया। अन्य सहयोगी संस्थाएं द बुद्धिस्ट प्रचारक विंग छत्तीसगढ़ ,डॉ आंबेडकर स्वास्थ्य मिशन, भारतीय बौद्ध महासभा पंजीयन क्रमांक 3227 और त्रिरत्न बौद्ध महासंघ छत्तीसगढ़ रही। इस दौरान तथागत कल्याण समिति ने भिलाई में रक्तदाताओं को फल प्रदान किया। समता सुरक्षा सेना महिला विंग ने रक्तदाताओं को नारियल पानी पिलाया। भारतीय बौद्ध महासभा दुर्ग पंजीयन क्रमांक 3227 ने रक्तदाताओं तथा इस शिविर में आए कार्यकर्ताओं के लिए भोजन पानी की व्यवस्था की।

चंद्रशेखर जनबंधु ने निशुल्क चाय और कॉफ़ी की व्यवस्था सुबह 10:00 बजे से शाम 5:00 बजे तक की गई। राजकमल बोरकर परिवार और कामड़े परिवार दुर्ग ने पंचशील बौद्ध विहार में रक्तदान दाताओं को फल प्रदान किया। समता सुरक्षा सेना छत्तीसगढ़ के प्रमुख आयुष्मान अरविंद चौधरी ने सभी रक्तदाताओं और कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया। आयोजन में अनिल जोग, जितेंद्र मडामे, बबलू चौरे,योगेश खांडेकर और आयुष्मति सविता बौद्ध, जयश्री बौद्ध और तनुजा वासनिक का विशेष सहयोग रहा।

भिलाई निगम ने आपातकालीन आगजनी हो जाने पर बचाव के तरीके बताए

श्रीकंचनपथ न्यूज

भिलाई। नगर पालिक निगम भिलाई के कभी भी विभागो में आगजनी हो जाने पर रोकने के लिए फायर सिलेंडर लगाया गया है। जिससे अचानक किसी कारणवश या ईलेक्ट्रीकल शॉर्ट सर्किट होने से आग लग जाती है। जिससे विभाग कागजात जलने या किसी दुर्घटना को रोकने के लिए यह सिलेंटर सभी विभागों के दरवाजे के पास लगाया गया है। जिससे किसी प्रकार की घटना होने पर उसको तत्काल रोका जा सके।

आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय ने सभी विभाग के कर्मचारियो को अपने आफिस के बाहर बुलाया। उनको ड्राई पावडर सिलेंडर की जानकारी दिए कि किस प्रकार से आगजनी को रोका जा सकता है। अक्सर देखा जाता है कि आफिस, भवन एवं अन्य जगहो पर किसी बिजली के तार टुटने या एसी फटने की वजह से आग लग जाती है। जिससे वहां पर रखे सभी कागज, लकड़ी या अन्य सामग्री आग से जल जाते है। जिसको रोकने के लिए सिलेंडर के उपयोग से कैसे आग पर काबू पाया जाए उसके बारे में जानकारी प्रदान की गई। आयुक्त की उपस्थिति में अग्निशमन विभाग के कर्मचारी ने आग जलाकर उसे सिलेंडर के माध्यम से बूझाकर दिखाया। आयुक्त स्वयं सभी विभागो में जाकर निरीक्षण किये की सभी विभागो में यह उपकरण लगाया गया है कि नहीं। जिससे आपतकालीन की स्थिति होने पर दुर्घटना को रोका जा सके।

प्रशिक्षण के दौरान निगम के सभी विभागो के अधिकारी कर्मचारी अधिक संख्या में उपस्थित रहे एवं प्रशिक्षण की जानकारी लिए।

बीएसएफ की पहल पर कांकेर के नक्सल प्रभावित क्षेत्र के युवक युवतियों का जत्था विशाखापट्नम रवाना

श्रीकंचनपथ न्यूज

भिलाई। 16वें आदिवासी युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम के 5 दिसंबर को कांकेर के अति दुर्गम एवम् नक्सल प्रभावित क्षेत्रों से 20 आदिवासी युवा लड़के एवं 20 युवा लड़कियों का दूसरा दल विशाखापट्नम रवाना किया गया। इस दल को रायपुर रेलवे स्टेशन से विशाखापट्नम के लिए रवाना किया गया।

सीमा सुरक्षा बल के 2 पुरूष सुरक्षा अधिकारी और 2 महिला सुरक्षा अधिकारी भी इनके साथ रवाना हुए। यह दल विशाखापट्नम में भारत के विभिन्न राज्यों के अन्य आदिवासी युवाओं से मिलकर अन्य राज्यों की संस्कृति से रूबरू होगा।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत आदिवासी युवक एवं युवतियों को उनके उज्ज्वल भविष्य तथा अधिकार के बारे में उचित व उपयुक्त जानकारी पान, रहन-सहन, सांस्कृतिक गतिविधियाँ एवं वेशभूषा से रूबरू होंगे। इस कार्यक्रम में सभी राज्यों के स्थानीय लोक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी जायेगी। साथ ही विशाखापट्नम के प्रसिद्ध, दर्शनीय एवं सांस्कृतिक महत्व के स्थलों का भ्रमण कराया जाएगा।

माई भारत (नेहरू युवा केन्द्र संगठन), नई दिल्ली, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार एवं गृह मंत्रालय के संयुक्त तत्वाधान में 16वां आदिवासी युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। प्रत्येक आदिवासी युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम की अवधि 7 दिन प्रदान की जायेगी, साथ ही साथ अन्य राज्यों से भाग लेने वाले युवक-युवतियों के बीच मेल-मिलाप बढ़ेगा, जिससे वे एक-दूसरे के खान-है। छत्तीसगढ के कांकेर और नारायणपुर जिले में तैनात सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के नक्सल प्रभावित इलाके से इस वर्ष कुल 13 भ्रमण कार्यक्रमों के अतंर्गत 18 से 22 वर्ष आयु वर्ग के 500 चयनित युवा भाग ले रहे है।

इस आदिवासी युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम की प्रमुख गतिविधियों में संवैधानिक अधिकारियों और प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ संवाद सत्र, पैनल चर्चा, व्याख्यान सत्र, भाषण प्रतियोगिता, कैरियर संबंधी मार्गदर्शन, चल रहे खेल आयोजनों के बारे में जानना शामिल है। इसके अलावा प्रतिभागी विशाखापट्नम के उद्योगो एवं सुरक्षा बलों के कैम्पों का भ्रमण करेंगे। इस कार्यक्रम के दुसरे जत्थे को विशाखापट्नम रवाना करते हुए सीमा सुरक्षा बल सीमांत मुख्यालय के महानिरीक्षक आनंद प्रताप सिंह ने बधाई व शुभकामनाएं दी।

बीएसपी की अवैध कब्जाधारियों पर कार्यवाही जारी, 26 आवास रिक्त कराए गए

श्रीकंचनपथ न्यूज

भिलाई। सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र के नगर सेवाएं विभाग के प्रवर्तन अनुभाग की टीम अवैध कब्जाधारियों के विरूध्द लगातार कार्यवाही कर रही है। आज लगातार तीसरे तीन कार्यवाही करते हुए सेक्टर-05 के सड़क न. 06 के ब्लॉक नं. 03 तथा 04 के कुल 26 आवासों से कब्जाधारियों को बेदखल किया गया।

भिलाई इस्पात संयंत्र प्रबंधन ने सभी अवैध कब्जेधारियों को समाचार पत्र तथा माइकिंग के माध्यम से आवास को स्वत: रिक्त करने के लिए निर्देशित किया था। इस कारण कई कब्जाधारियों ने अपने आवास स्वत: खाली कर

दिए तथा कुछ अन्य कब्जाधारियों को पुलिस बल की सहायता से बेदखल किया गया। प्रवर्तन अनुभाग द्वारा इस सभी आवासों को दोबारा कब्जा होने से बचाने इन आवासों के खिड़की दरवाजे इत्यादि को निकाला दिया गया है तथा विद्युत विभाग द्वारा विद्युत विच्छेद कर दिया गया है। उल्लेखनीय है कि उपरोक्त आवासों को संयंत्र प्रबंधन द्वारा निवास हेतु जोखिम भरा तथा जान-माल के नुकसान की संभावना की दृष्टि से अनफिट घोषित किया गया था।

प्रवर्तन अनुभाग द्वारा भिलाई टाउनशिप के आवासों में अवैध कब्जाधारियों के विरूद्ध वृहत स्तर पर बेदखली कार्यवाही लगातार जारी है। इसी क्रम में 05 दिसम्बर 2024 को प्रवर्तन अनुभाग की टीम द्वारा सेक्टर-05 के कुल 22 आवासों को कब्जामुक्त कराया गया तथा 04 दिसम्बर 2024 को सेक्टर-06 एवेन्यू तथा अन्य सेक्टर्स से 15 आवासों से कब्जाधारियों को बेदखल किया गया।

प्रवर्तन अनुभाग द्वारा आगे भी संयंत्र के आवासों में निवासरत अवैध कब्जाधारियों के विरूद्ध कार्यवाही जारी रहेगी। भिलाई इस्पात संयंत्र प्रबंधन, अवैध कब्जा कर निवासरत सभी अवैध कब्जेधारियों को निर्देशित करती है कि अगर वें कार्यवाही से बचना चाहते हैं तो तत्काल अपने आवास को स्वत: रिक्त कर देवे, अन्यथा उन पर वैधानिक कार्यवाही की जाएगी।

डॉ. अम्बेडकर की पुण्यतिथि मनाई गई

दुर्ग। हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग में दिनांक 06 दिसंबर 2024 को जननायक डॉ. भीमराव अंबेडकर की पुण्य तिथि में उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर कुलसचिव, भूपेन्द्र कुलदीप ने उनके जीवन मूल्य और संविधान निर्माण के लिए किए गए उनके कार्यों को रेखांकित किया। वित्त अधिकारी सुषील गजभिये ने बताया कि किस प्रकार डॉ. अम्बेडकर ने सभी जनों को उनका अधिकार देने हेतु संविधान में प्रावधान किया, किस प्रकार से नारी उत्थान के लिए डॉ. अम्बेडकर ने कार्य किया। डॉ. अम्बेडकर की पुण्य तिथि पर उपकुलसचिव, युगल किशोर मंडावी एवं अन्य कर्मचारी उपस्थित थे।

खास खबर...

आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका पद के लिए 12 दिसंबर तक आवेदन आमंत्रित

रायपुर। महिला एवं बाल विकास विभाग के निर्देशानुसार एकीकृत बाल विकास परियोजना रायपुर शहरी - 02, जिला रायपुर में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं एवं सहायिकाओं के रिक्त पदों हेतु आवेदन पत्र आमंत्रित किया गया है। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका के लिए 01 रिक्त पद पर 05 दिसंबर से 19 दिसंबर तक आवेदन किया जा सकता है। परियोजना अधिकारी ने बताया कि निर्धारित प्रारूप में आवेदन पत्र परियोजना कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है । साथ ही आवेदन निर्धारित तिथि व कार्यालयीन समय पर एकीकृत बाल विकास परियोजना रायपुर शहरी - 02, एच.आई.जी 82 सेक्टर - 01, डी.डी. नगर स्थित कार्यालय में जमा भी किया जा सकता है। अधिक जानकारी के लिए परियोजना कार्यालय, नगर निगम रायपुर तथा वार्ड पार्षद कार्यालय से संपर्क किया जा सकता है।

मरीज को ब्लड चढ़ाने में देरी, एक कॉल में समस्या हुई दूर

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के सुशासन में रायपुर जिला प्रशासन द्वारा एक फोन कॉल पर समस्या का निराकरण हो रहा है। रिम्स हॉस्पिटल में भर्ती मरीज त्रिलोकी वर्मा के भतीजे हेमराज वर्मा ने कलेक्टोरेट के जनसमस्या निवारण कॉल सेंटर में किया। श्री वर्मा ने कॉल सेंटर में फोन कर जानकारी दी कि उनके चाचा रिम्स हॉस्पिटल में एडमिट हैं, उन्हें ब्लड चढ़ाने के लिए देरी की जा रही थी और अस्पताल प्रबंधन द्वारा भी रिस्पांस नहीं दिया जा रहा था। जिसके बाद श्री वर्मा ने कॉल सेंटर में कॉल कर पूरे मामले की जानकारी दी। इसके बाद तत्काल कार्रवाई प्रारंभ करते हुए अस्पताल प्रबंधन से मदद कराई गई और उन्हें तत्काल ब्लड चढ़ाया गया। समस्या का निराकरण होने पर मरीज के परिजन ने संतुष्टि जताई।

राज्य वीरता पुरस्कार वर्ष 2024 के लिए प्रविष्टियां 2 जनवरी तक आमंत्रित

गरियाबंद। छत्तीसगढ़ शासन द्वारा प्रदेश के बच्चों को किसी घटना विशेष में उनके द्वारा प्रदर्शित अदम्य साहस एवं बुद्धिमत्ता के लिए राज्य वीरता पुरस्कार प्रदान किया जाना है। इसके तहत 05 बालक/बालिकाओं को 25 हजार रूपये की राशि तथा प्रशस्ति पत्र सम्मान के रूप प्रदान किया जायेगा। इस पुरस्कार हेतु वर्ष 2024 के लिए प्रविष्टियां आमंत्रित है। इस संबंध में विस्तृत जानकारी संयुक्त जिला कार्यालय महिला एवं बाल विकास विभाग गरियाबंद के कक्ष क. 79 से प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही कार्यालयीन समय में 02 जनवरी 2025 तक आवेदन प्राप्त कर जमा कर सकते हैं। आवेदन के साथ समस्त विवरण एवं प्रमाणों के साथ आवेदन पत्र दो प्रतियों में प्रस्तुत करना होगा। निर्धारित तिथि के पश्चात प्राप्त आवेदनों पर कोई विचार नही किया जायेगा।

ग्राम सोरिद में आयुष स्वास्थ्य शिविर का आयोजन 10 को

गरियाबंद। विकासखंड स्तरीय आयुष स्वास्थ्य शिविर का आयोजन 10 दिसम्बर 2024 को विकासखंड छुरा के ग्राम सोरिद गायत्री मंदिर परिसर में आयोजित किया जायेगा। शिविर में आयुर्वेदिक एवं होम्योपैथी चिकित्सा अधिकारी शिविर में मौजूद होकर लोगों की स्वास्थ्य जांच करेंगे। शिविर में दवाई वितरण के लिए फार्मासिस्ट भी मौजूद रहेंगे।

कान्यकुब्ज ब्राह्मण समाज ने सहयोग के लिए बढ़ाया कदम

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। पर्यावरण संरक्षण गतिविधि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के द्वारा आगामी 13 जनवरी 2025 से प्रयागराज में आयोजित होने वाले महाकुंभ के लिए प्लास्टिक और डिस्पोजल के प्रयोग को पूर्ण रूप से बंद कर हरित कुंभ के प्रतीक के रूप में मनाये जाने के लिए कुंभ के आयोजन स्थल पर भेजने के लिए प्रत्येक घर से एक थाली एक थैला संकलन का अभियान देश भर में किया गया है।

इस तारतम्य में 6 दिसम्बर शुक्रवार को कान्यकुब्ज ब्राह्मण समाज द्वारा आशीर्वाद भवन में थाली और थैला भेंट करने के लिए राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया जिसमें पं. धीरेन्द्र मिश्रा एवं श्रीमती प्राची मिश्रा उपस्थित हुए। भगवान परशुराम की पूजा अर्चना के बाद पं. धीरेन्द्र मिश्र ने आयोजन की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पूरे छत्तीसगढ़ से 50 हजार से अधिक थाली और थैला संकलित कर भेजने का लक्ष्य रखा गया है। कान्यकुब्ज ब्राह्मण समाज की ओर से सचिव पं. सुरेश मिश्र ने अपने संबोधन में कहा कि यह महाकुंभ हरित कुंभ के नाम से जाना जाए इस हेतु अत्यंत सराहनीय प्रयास संघ के द्वारा किया जा रहा है।

पर्यावरण के लिए इस तरह की जागृति अत्यंत आवश्यक है और हम समाज की ओर से ज्यादा से ज्यादा सहयोग करने के लिए प्रतिबद्ध है। उपाध्यक्ष पं. राघवेन्द्र मिश्रा एवं कार्यकारिणी सदस्य पं. अजय अवस्थी ने आमंत्रित अतिथियों का स्वागत किया एवं अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर पुष्टिकर ब्राह्मण समाज ने भी उपस्थित होकर इस महादान के कार्यक्रम में थाली एवं थैला भेंट कर अपना अमूल्य योगदान दिया। संस्था के अध्यक्ष पं. चन्द्र प्रकाश व्यास ने कहा कि हमारा यह सौभाग्य है कि इस महाकुंभ में हमारे समाज से योगदान दिया जा रहा है और आगे भी हम जो हमसे बन पड़ेगा यथाशक्ति सहयोग करेंगे, यह आयोजन अत्यंत सराहनीय है। कार्यक्रम का सफल संचालन सहसचिव पं. रज्जन अग्निहोत्री ने किया एवं सम्पूर्ण सामग्री अतिथियों को प्रदान की। इस अवसर पर कार्यकारिणी सदस्य पं. शशिकांत मिश्र पुष्टिकर ब्राह्मण समाज से पं. जयकिशन जोशी, पं. धर्मेन्द्र ओझा, पं. विजय शंकर व्यास एवं पं. अशोक पुरोहित, वर्ल्ड ब्राह्मण फेडरेशन के अध्यक्ष पं. अरविन्द ओझा, आदि उपस्थित रहे।

सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के माध्यम से भारत को सशक्त करना, सीएससी व कैट ने मिलाया हाथ-पारवानी

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। देश के सबसे बड़े व्यापारिक संगठन कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष अमर पारवानी, चेयरमेन मगेलाल मालू, अमर गिदवानी, प्रदेश अध्यक्ष जितेन्द्र दोशी, कार्यकारी अध्यक्ष विक्रम सिंहदेव, परमानन्द जैन, वाशु माखीजा, महामंत्री सुरिन्द्रर सिंह, कार्यकारी महामंत्री भरत जैन, एवं कोषाध्यक्ष अजय अग्रवाल ने बताया कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के लोगों को सामाजिक सेवा योजनाओं से सशक्त बनाने के विजन के तहत, आज नई दिल्ली स्थित कॉन्स्टीट्यूशन क्लब में अयोजित एक समारोह के दौरान इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय के अंतर्गत सीएससी ई-गवर्नेंस सर्विसेज इंडिया लिमिटेड और कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के बीच एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। इस साझेदारी का उद्देश्य देश भर में अंतिम छोर तक लाभार्थियों की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित करना है।

कैट के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष अमर पारवानी एवं प्रदेश अध्यक्ष जितेन्द्र दोशी ने बताया कि यह रणनीतिक साझेदारी भारत भर के व्यापारियों और नागरिकों को केंद्र सरकार की सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के तहत लोगों को पंजीकरण में सहायता प्रदान कर सशक्त करेगी जिनमें मुख्य रूप से :- 1. राष्ट्रीय पेंशन योजना (एनपीएस) 2. प्रधानमंत्री श्रम योगी मान-धन योजना 3. अटल पेंशन योजना 4. प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना 5. लखपति दीदी और डिजी सखी योजना 6. प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना 7. प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, और अन्य अनेक योजनाएं ।

श्री पारवानी एवं श्री दोशी ने आगे बताया कि इस पहल के तहत, सीएससी कैट के साथ साझेदारी करते हुए बड़ी मात्र में शिविरों का आयोजन करेगा, जिससे इन योजनाओं को सीधे व्यापारियों और आम जनता तक पहुंचाया जाएगा। इसका उद्देश्य लाखों लोगों के वित्तीय भविष्य को सुरक्षित करना और सरकारी कल्याणकारी योजनाओं तक उनकी पहुंच को सरल बनाना है। सीएससी एसपीवी, जो डिजिटल इंडिया मिशन का एक प्रमुख हिस्सा है, पूरे देश में लगभग 6 लाख सीएससी केंद्र संचालित करता है। ये केंद्र डिजिटल और वित्तीय रूप से समावेशी भारत की रीढ़ के रूप में कार्य करते हैं और सरकारी योजनाओं को दूरदराज के क्षेत्रों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कैट, जो 48,000 से अधिक व्यापारी एसोसिएशन तथा फेडरेशन के माध्यम से देशभर के 9 करोड़ से अधिक व्यापारियों का प्रतिनिधित्व करता है, व्यापारिक समुदाय और अन्य व्यावसायिक लाभार्थियों के कल्याण और विकास के प्रति समर्पित है। यह समझौता ज्ञापन व्यापारियों और अन्य वर्गों के लिए व्यापक सामाजिक और वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने के कैट के मिशन के साथ मेल खाता है और उनकी आर्थिक भूमिका को और मजबूत करता है।

इस अवसर पर, कैट के राष्ट्रीय महामंत्री एवं चांदनी चौक से सांसद श्री प्रवीन खंडेलवाल ने कहा की यह समझौता ज्ञापन भारत के व्यापारिक समुदाय को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। छोटे व्यापारी लंबे समय से भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ रहे हैं, लेकिन वे अक्सर जागरूकता और पहुंच की कमी के कारण सरकारी कल्याण योजनाओं का लाभ उठाने में असमर्थ रहे हैं। सीएससी और कैट के बीच यह साझेदारी सुनिश्चित करेगी कि ये महत्वपूर्ण योजनाएं एवं पेंशन से लेकर उद्यमशीलता समर्थन तक देश के हर कोने तक, विशेष रूप से छोटे व्यापारियों तक पहुंचे।

कैट के राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री बी.सी. भरतिया ने कहा की सीएससी के डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर और कैट के 9 करोड़ से अधिक व्यापारियों के व्यापक नेटवर्क की संयुक्त पहुंच के साथ, यह पहल न केवल लाखों व्यापारियों के वित्तीय भविष्य को सुरक्षित करेगी बल्कि एक अधिक समावेशी और सामाजिक रूप से सशक्त व्यापारिक समुदाय को बढ़ावा देगी। यह साझेदारी वित्तीय समावेशन के सरकार के दृष्टिकोण को दर्शाती है और एक मजबूत और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

सीएससी ई-गवर्नेंस के प्रबंध निदेशक और सीईओ, श्री संजय राकेश ने कहा कि लगभग 6 लाख वीएलई के साथ, सीएससी की 15 साल की यात्रा सामाजिक उत्थान के लिए सामुदायिक और गैर-सरकारी सेवा वितरण की शक्ति को दर्शाती है। हमारा लक्ष्य दूरदराज के क्षेत्रों में स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाकर उनके जीवन में बदलाव लाना है। यह समझौता सामाजिक सशक्तिकरण को आगे बढ़ाने में सीएससी की भूमिका को और मजबूत करता है।

इस कार्यक्रम में सीएससी एसपीवी के वरिष्ठ अधिकारियों, कैट के प्रतिनिधियों और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जो तकनीक-आधारित और सामाजिक रूप से प्रभावशाली पहलों के माध्यम से भारत के व्यापारिक समुदाय को सशक्त बनाने के प्रति उनकी साझा प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

कलेक्टर ने पीएम स्वनिधि योजना के ऋण प्रकरण की स्वीकृत नहीं करने पर बैंकों पर जताई नाराजगी

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने कलेक्टोरेट परिसर स्थित रेडक्रॉस सभाकक्ष में डीएलसीसी की बैठक ली। बैठक में सभी बैंकों के प्रतिनिधि शामिल हुए। कलेक्टर डॉ. सिंह ने पीएम स्वनिधि योजना के ऋण प्रकरण की कम संख्या में स्वीकृति देने पर नाराजगी जताई।

कलेक्टर ने कहा कि अधिक से अधिक संख्या में शासकीय योजनाओं का लाभ दिलाते हुए बैंक ऋण प्रकरण में दस्तावेजों का परीक्षण गंभीरता के साथ करें और अधिक से अधिक संख्या में स्वीकृति दिलाएं। ऐसे प्रकरण में संवेदनशीलता से विचार करें और स्वीकृत दें। कलेक्टर ने कहा कि स्लम बस्तियों और उसके आसपास के क्षेत्रों में सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे। इसके लिए बैंकों के सीसीएसआर मद का इस्तेमाल करने में सहयोग किया जाएं। डॉ. सिंह बैंकों को डिजिटल लेनदेन को बढ़ावा देते हुए रायपुर को डिजिटल जिला बनाने के लिए निर्देश दिया। कलेक्टर ने कहा कि नागरिकों विशेषकर महिला समूहों को लोन प्रदान करते समय प्रक्रियाओं को सरल करें। महिला समूहों के प्रमुख पदाधिकारियों को बुलाकर जल्द से जल्द लोन प्रदान करें। इस अवसर पर नगर जिला पंचायत सीईओ श्री विश्वदीप उपस्थित थे।

राज्यपाल से अखिल भारतीय कुर्मी क्षत्रीय महासभा के पदाधिकारियों ने भेंट की

रायपुर। राज्यपाल रमेन डेका से राजभवन में अखिल भारतीय कुर्मी क्षत्रीय महासभा छत्तीसगढ़ के पदाधिकारियों ने सौजन्य भेंट की। उन्होंने अपने 128 वर्ष पुराने संगठन की गतिविधियों से राज्यपाल को अवगत कराया और आगामी माह महासमुंद में होने वाले महासभा के सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि श्री डेका को आमंत्रित किया। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष चंद्रभूषण वर्मा सहित मनोज वर्मा, द्रोण चंद्रकर, श्रीमती सरिता वर्मा, श्रीमती निरंजना चंद्राकर उपस्थित थे।

धौराकोट में जिला स्तरीय जनसमस्या निवारण शिविर का हुआ आयोजन

श्रीकंचनपथ न्यूज

गरियाबंद। जिले के बिन्द्रानवागढ़ विकासखण्ड के ग्राम धौराकोट में आज जिला स्तरीय जनसमस्या निवारण शिविर का आयोजन किया गया।शिविर में राजस्व, पंचायत, कृषि, क्रेडा, वन, स्वास्थ्य, पीएचई, महिला एवं बाल विकास, उद्योग, शिक्षा, आदिवासी विकास, विद्युत, श्रम, समाज कल्याण उद्योग, आयुर्वेद सहित अन्य विभागों द्वारा आमजनों से प्राप्त आवेदनों के निराकरण के लिए स्टॉल लगाए गए थे।शिविर में लोगों के समस्याओं से संबंधित 243 आवेदन प्राप्त हुए।

शिविर में अधिकांश आवेदनों का मौके पर ही निराकरण किया गया। लंबी प्रक्रियाओं वाले एवं उच्च कार्यालयों के मार्गदर्शन से संबंधित आवेदनों के निराकरण के बारे में आवेदकों को अवगत कराया गया। शिविर में जिला अधिकारियों ने अपने-अपने विभागों के जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देते हुए ग्रामीणों को जागरूक होकर अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की है। शिविर में बिन्द्रानवागढ़ विधानसभा क्षेत्र के विधायक जनक ध्रुव एवं कलेक्टर दीपक अग्रवाल भी शामिल हुए।शिविर में विभागों द्वारा हितग्राहियों को विभागीय योजनाओं से लाभान्वित किया गया। इस दौरान गर्भवती महिलाओं की गोद भराई की रस्म के तहत सुपोषण किट भी प्रदान किया गया। शिविर में विधायक श्री ध्रुव ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि राज्य शासन के निर्देशानुसार लोगों की समस्याओं का त्वरित निराकरण के लिए माह में दो बार जिला स्तरीय जनसमस्या निवारण शिविर का आयोजन किया जा रहा है।इसके माध्यम से शिविर स्थल सहित आसपास गांवों के लोगों की विभिन्न समस्याओं का एक ही स्थान पर तेजी से निराकरण किया जा रहा है। इस दौरान जिला पंचायत सीईओ रीता यादव, जनपद अध्यक्ष देवभोग नेहा सिंघल, पूर्व विधायक डमरूधर पुजारी, पूर्व संसदीय सचिव गोवर्धन सिंह मांझी,देवभोग एसडीएम तुलसी दास मरकाम, सरपंच, पंच सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं ग्रामीणजन मौजूद रहे।

इस दौरान कलेक्टर दीपक कुमार अग्रवाल ने कहा कि ग्रामीणजनों की विभिन्न समस्याओं का एक ही स्थान पर त्वरित निराकरण के लिए शिविर का आयोजन किया जा रहा है।इसी तारतम्य में धौराकोट में शिविर का आयोजन किया गया। उन्होंने कहा कि क्षेत्र अंतर्गत गांवों में समस्याओं से संबंधित प्राप्त शिकायतों का जिला प्रशासन द्वारा तत्परता से निराकरण किया जायेगा। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने बताया कि शासन के मंशानुरूप जिले में प्रत्येक माह 2 बार जिला स्तरीय जनसमस्या निवारण शिविर का आयोजन किया जाता है।ग्रामीण क्षेत्र के जो लोग जिला मुख्यालय नहीं पहुंच पाते है।उन लोगों के लिए यह शिविर काफी लाभदायक है। शिविर में सभी विभाग के जिला अधिकारी उपस्थित रहकर ग्रामीणजनों की मांग, समस्या एवं शिकायतों को सुनकर उनका अधिक से अधिक शिविर स्थल पर ही निराकरण करने का प्रयास करते है। गरियाबंद जिले को शत प्रतिशत सेचुरेशन के लिए चयनित किया गया है।जिसका ग्राम पंचायतवार छूटे हुए लोगों का सर्वे कर लिया गया है। जिसमें 37 प्रकार की हितग्राहीमूलक सेवाएं शामिल है। इन सेवाओं से सभी पात्र व्यक्तियों को लाभान्वित करने का प्रयास किया जाएगा।इसके लिए पंचायत स्तर पर शिविर भी लगाए जायेंगे। जिसमें पात्र व्यक्तियों को इन योजनाओं से लाभान्वित किया जायेगा। इस दौरान कलेक्टर श्री अग्रवाल ने कहा कि जिले के खरीदी केन्द्रों में सुचारू रूप से धान खरीदी जारी है।केवल पंजीकृत किसानों से ही धान की खरीदी की जा रही है। अवैध धान भण्डारण,परिवहन एवं खरीदी-बिक्री पर लगातार कार्यवाही भी की जा रही है।

रायपुर के बॉक्सरों ने राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में रनरअप ट्रॉफी पर किया कब्जा

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। भिलाई के जवाहर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स हाउसिंग बोर्ड में आयोजित 16वीं राज्यस्तरीय बॉक्सिंग प्रतियोगिता में रायपुर के बॉक्सरों ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए रनरअप ट्रॉफी पर कब्जा किया। यह प्रतियोगिता 2 से 4 दिसंबर तक आयोजित की गई, जिसमें राज्यभर के 150 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। रायपुर की टीम ने कोच हजारी लाल, सहायक कोच सोनू ध्रुव और रूपा ध्रुव के नेतृत्व में भाग लिया।

पुरुष वर्ग में: 65 किलोग्राम: आकाश साहू ने स्वर्ण पदक। 85 किलोग्राम: एलेक्स मिंज ने रजत पदक। 55 किलोग्राम: श्रेयांश सुखदेव ने कांस्य पदक। 60 किलोग्राम: विजय बंजारे ने कांस्य पदक। 75 किलोग्राम: कुश चंद्राकर ने कांस्य पदक। 80 किलोग्राम: सौम्य राज सिंह ने कांस्य पदक। +90 किलोग्राम: प्रणव दीवान ने कांस्य पदक।

महिला वर्ग में: 51 किलोग्राम: छाया पटेल ने स्वर्ण पदक। 70 किलोग्राम: राजबाला ने स्वर्ण पदक। 75 किलोग्राम: पूजा सिंह ने रजत पदक। विभा ठाकुर ने भी रजत पदक हासिल किया।

रायपुर एमेच्योर बॉक्सिंग एसोसिएशन के सचिव और पूर्व बॉक्सर नवीन दास ने खिलाड़ियों के प्रदर्शन की सराहना करते हुए उन्हें भविष्य की प्रतियोगिताओं के लिए शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि यह प्रदर्शन रायपुर की टीम की मेहनत और समर्पण को दर्शाता है। कोच हजारी लाल, जो मिवान स्टील्स लिमिटेड मंदिर हसौद कंपनी में सुरक्षा विभाग में कार्यरत हैं, ने कहा कि टीम को आगामी प्रतियोगिताओं के लिए और कड़ी मेहनत करनी होगी। इस शानदार उपलब्धि के साथ रायपुर के बॉक्सरों ने एक बार फिर राज्य स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। खिलाड़ियों और कोच के प्रयास से टीम ने भविष्य के लिए उम्मीदें जगा दी हैं।

परम सुंदरी कृति सेनन ने खुद को एक प्रतिशत एलिगेंट माना, फैंस से पूछे सवाल

फिल्म इंडस्ट्री की सफल और 'परम सुंदरी' अभिनेत्री कृति सेनन ने सोशल मीडिया पर एक मजाकिया वीडियो मोंटाज शेयर किया। अभिनेत्री ने खुद को केवल एक परसेंट ही एलिगेंट बताया। इंस्टाग्राम पर लेटेस्ट पोस्ट शेयर कर 'शहजादा' फेम कृति सेनन ने कैप्शन में लिखा, एक परसेंट एलिगेंट और 99 परसेंट... आप लोग क्या सोचते हैं। अभिनेत्री ने खुद को 99 परसेंट फनी और मजाकिया के साथ मूडी बताया, जिसकी झलक उन्होंने वीडियो में दिखाई।

वीडियो मोंटाज में अभिनेत्री मजाकिया अंदाज में नजर आ रही हैं। कृति सेनन की पोस्ट पर फैंस ने रिप्लाई करते हुए उन्हें 'खूबसूरत' बताया। कृति के एक फैन ने लिखा, मैंने आज बेहद क्यूट वीडियो देखा। दूसरे ने लिखा, आप मेरी ऑल टाइम फेवरेट हो।

भेड़िया फेम कृति सेनन का सोशल मीडिया से गहरा रिश्ता है। अभिनेत्री अपने फैंस से जुड़ने का कोई भी मौका हाथ से जाने नहीं देती हैं। इसी कड़ी में वह अक्सर एक से बढ़कर एक मजाकिया या अपने फैशन ट्रेंड से जुड़े पोस्ट शेयर करती रहती हैं। कृति का इंस्टाग्राम उनकी एक से बढ़कर एक ग्लैमरस तस्वीरों से भरा पड़ा है।

फिल्म इंडस्ट्री की सफल अभिनेत्री कृति सेनन के वर्कफ्रंट की बात करें तो अभिनेत्री आने वाले साल के लिए कमर कस चुकी हैं। उनकी कई फिल्म साल 2025 में रिलीज होने वाली हैं। इस लिस्ट में अनुराग कश्यप के निर्देशन में तैयार किल बिल, अमर कौशिक की भेड़िया 2 है।

अभिनेत्री के करियर पर नजर डालें तो उन्होंने हीरोपंती से एक्टिंग में डेब्यू करने के बाद पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनका पिछला प्रदर्शन दोपत्ती, तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया के साथ काफी उम्दा रहा है। शशांक चतुर्वेदी के निर्देशन में तैयार दो पत्ती में कृति सेनन ने डबल रोल निभाया है। इस फिल्म में कृति सेनन के साथ काजोल और शहीर शेख लीड रोल में थे।

सनी देओल की जाट का पावर पैक्ड ऑफिशियली टीजर आउट

सनी देओल ने 2023 में फिल्म गदर 2 के साथ बॉलीवुड में कमबैक किया था जिसे दर्शकों ने खूब प्यार दिया और इसने कई रिकॉर्ड तोड़ते हुए बॉक्स ऑफिस पर तहलका मचा दिया था। अब फिर से सनी देओल थिएटर में एक धमाकेदार मास एक्शन फिल्म लाने वाले हैं जिसका नाम जाट है। सनी देओल की जाट को पुष्पा के मेकर्स ने बनाया है इसी के साथ ये सनी देओल का टॉलीवुड में डेब्यू भी हो रहा है। फिल्म का टीजर पुष्पा 2 के साथ थिएटर में दिखाया गया वहीं इसे आज ऑफिशियली रिलीज कर दिया गया है।

टीजर की शुरुआत में ही सनी देओल की एंट्री धमाकेदार होती है। जिसके बाद उनका पावरफुल डायलॉग, मैं जाट हूं, सिर कटने के बाद भी हाथ हथियार नहीं छोड़ता। वहीं इस बार सनी देओल का एक्शन थोड़ा हटकर है, उनका गदर में हैंडपंप उखाड़ने वाला सीक्वेंस काफी फेमस है लेकिन इस बार वे हैंडपंप नहीं बल्कि पंखा ही उखाड़ लाए। उनके अलावा फिल्म में रणदीप हुड्डा लीड रोल में हैं। टीजर देखकर पता चलता है कि रणदीप सनी देओल के अपोजिट होंगे यानि रणदीप फिल्म में विलेन बने हैं। मैथ्री मूवी मेकर्स ने टीजर रिलीज करते हुए लिखा, शैतान नहीं, भगवान नहीं जाट है वो।

सनी देओल की फिल्म हो और एक्शन ना हो ऐसा कैसे हो सकता है। मैथ्री मूवी मेकर्स पुष्पा 2 के बाद सनी देओल की जाट के साथ फिर से धमाका करने के लिए तैयार हैं। टीजर में ही सनी के एक्शन अवतार को शानदार तरीके से दिखाया गया है। वहीं टीजर से अंदाजा लगाया जा सकता है कि फिल्म के डायलॉग भी जबरदस्त हैं। जो फिर से दर्शकों को थिएटर में तालियां बजाने पर मजबूर करेंगे।

आपको बता दें जाट का टीजर मेकर्स ने पुष्पा 2 के साथ थिएटर में रिलीज कर दिया था जो सोशल मीडिया पर कुछ वायरल हुआ वहीं अब इसे मेकर्स ने ऑफिशियल रिलीज कर दिया है। जाट में सनी देओल और रणदीप हुड्डा लीड रोल में हैं। इस फिल्म को गोपीचंद मालिनेनी ने डायरेक्ट किया है और पुष्पा के मेकर्स ने प्रोड्यूस किया है। फिल्म अप्रेल 2025 में रिलीज होने के लिए तैयार है।

सोफी चौधरी ने बोल्डनेस से इंटरनेट पर बरपाया कहर

एक्ट्रेस की हॉटनेस देख यूज़र्स ने दिए जबरदस्त रिएक्शंस

बॉलीवुड एक्ट्रेस और सिंगर सोफी चौधरी आज किसी भी पहचान की मोहताज नहीं हैं। उन्होंने कई गानों के लिए प्लेबैक सिंगिंग भी की है। उनका नाम बेहतरीन मॉडल की लिस्ट में भी शामिल है। एक्ट्रेस भले ही 35 साल की हो चुकी हैं, लेकिन आए दिन अपनी हॉटनेस और बोल्डनेस से इंटरनेट का पारा बढ़ा देती हैं। हाल ही में उनकी लेटेस्ट फोटोशूट की कुछ तस्वीरें सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही हैं, जिसमें उनकी अदाएं देखकर फैंस मदहोश हो गए हैं।

बॉलीवुड एक्ट्रेस सोफी चौधरी ने अपने करियर की शुरुआत साल 2000 में पोप सिंगर के तौर पर की थी। अब उनका नाम फिल्मी दुनिया की जानी-मानी अभिनेत्रियों की लिस्ट में शामिल है।

हाल ही में एक्ट्रेस सोफी चौधरी ने अपने लेटेस्ट फोटोशूट की तस्वीरें फैंस के बीच साझा की हैं। इन फोटोज में उनका स्टनिंग अंदाज देखकर फैंस एक बार फिर से बेकाबू हो गए हैं।

फोटोज में आप देख सकते हैं एक्ट्रेस सोफी चौधरी ने गोल्डन कलर का रिवीलिंग गाउन पहना हुआ है, जिसमें वो कैमरे के सामने एक से बढ़कर एक पोज देते हुए अपना परफेक्ट फिगर फ्लॉन्ट करती हुई नजर आ रही हैं।

बालों को ओपन कर के और साथ ही लाइट मेकअप कर के एक्ट्रेस सोफी चौधरी ने अपने आउटलुक को कंप्लीट किया है। बता दें कि एक्ट्रेस सोफी चौधरी जब भी अपनी फोटोज इंस्टाग्राम पर पोस्ट करती हैं तो फैंस उनके हर एक लुक पर जमकर लाइक्स और कॉमेंट्स करते हैं। हालांकि इन फोटोज में भी कुछ ऐसा ही देखने को मिल रहा है। एक यूजर ने कॉमेंट करते हुए लिखा है- गॉर्जियस। दूसरे यूजर ने लिखा है- ब्यूटिफुल। वहीं, तीसरे यूजर ने लिखा है लवली। ऐसे ही एक के बाद यूजर्स हार्ट और फायर इमोजी भेजते हुए अपनी प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं।

14 भाषाओं में बनेगी 90 करोड़ के बजट वाली फिल्म कतानारः द वाइल्ड सॉरसरर

सिनेमा की दुनिया में इन दिनो साउथ की फिल्मों का पूरी तरह से कब्जा। ये फिल्में रिलीज होते ही बॉक्स ऑफिस पर छा जाती हैं। साउथ की इन फिल्मों को लोग काफी पसंद करते हैं। कांतारा से लेकर पुष्पा तक अलग-अलग जोनर की फिल्मों को खूब पसंद किया जा रहा है। सस्पेंस, थ्रिलर और हॉरर फिल्मों में तो साउथ की फिल्मों का कोई जवाब नहीं है। अब बात हॉरर की आई है तो बता दें कि ये जॉनरर भारत में काफी पसंद किया जाता है, यही वजह है कि बॉक्स ऑफिस पर शैतान, स्त्री 2 और भूल भुलैया 3 जैसी फिल्में कमाल कर रही हैं। अब बारी है साउथ सिनेमा की एक हॉरर फिल्म की। ये एक ऐसी फिल्म होने वाली जिसे देखने के बाद आपकी रूह कांप जाएगी।

■ साउथ की इस हॉरर मूवी के आगे पानी कम है शैतान ■

सिनेमाघरों में खौफ का मंजर पैदा करने के लिए एक फिल्म दस्तक देने के लिए तैयार है। इसके आगे शैतान, स्त्री 2 और भूल भुलैया 3 जैसी फिल्मों का हॉरर कुछ भी नहीं होने वाला है। इसकी शूटिंग हाल में ही पूरी कर ली गई है और अब पोस्ट प्रोडक्शन का काम भी शुरू हो चुका है। इस फिल्म का नाम है कतानारः द वाइल्ड सॉरसरर है। कुछ महीने ही टीजर के जरिए इस फिल्म की पहली झलक सामने आई थी। टीजर से ही जाहिर हुआ कि ये फिल्म काफी खतरनाक होने वाली है। जल्द ही अब ये फिल्म फैंस को सिनेमाघरों में देखने को मिल सकती है।

हॉरर मूवी कतानारः द वाइल्ड सॉरसरर ऐसी दुनिया में ले जाने का वादा कर रही है, जिसके बारे में न देखा होगा और न सोचा। विशाल सेट और अद्भुत वीएफएक्स दर्शकों को एक अलग सिनमाई अनुभव देंगे। रहस्य, रोमांच और भावनाओं का इस फिल्म में मिश्रण देखने को मिलेगा। कतानार का किरदार कैसा होगा, ये देखने लायक होने वाला है।

बता दें, इस फिल्म की स्टारकास्ट भी दमदार है। फिल्म में जयासूर्या, अनुष्का शेट्टी और विनीत जैसे दिग्गज एक्टर हैं। इस शूटिंग भी 45000 वर्ग फुट के विशाल स्टूडियो में की गई है। 90 करोड़ रुपये के बजट में इस फिल्म को तैयार किया जा रहा है। ये एक मलयालम फिल्म है जिसे 14 अन्य भाषाओं में भी रिलीज किया जाएगा, इसमें इंग्लिश, तमिल, तेलुगू, हिंदी, बंगाली, कन्नड़, चाइनीज, फ्रेंच, कोरियन, इटैलियन, रशियन, इंडोनेशियन और जैपनीज शामिल हैं।

मां से योद्धा बनीं नयनतारा, हाथों में हथियार लेकर दुश्मनों को किया लहूलुहान राक्कायी से उनकी पहली झलक

साउथ सिनेमा की लेडी सुपरस्टार कही जाने वाली नयनतारा अपने 40 साल जन्मदिन पर उनकी जीवन पर बनी डॉयक्यूमेंट्री नयनतारा: बियॉन्ड द फेयरीटेल रिलीज किया गया। वहीं, एक्ट्रेस के खास दिन पर ड्रमस्टिक्स प्रोडक्शंस ने एक नई फिल्म का एलान कर फैंस को खुश कर दिया है।

ड्रमस्टिक्स प्रोडक्शंस ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर नयनतारा के फैंस को तोहफा देते हुए उनकी नई फिल्म के टाइटल टीजर का एलान किया है। उन्होंने फिल्म से नयनतारा का धांसू पोस्टर जारी करते हुए टाइटल का खुलासा किया है और कैप्शन में टीजर का लिंक साझा करते हुए लिखा है, युद्ध शुरू हो गया है। लेडी सुपरस्टार नयनतारा की रक्कई का धमाकेदार टाइटल टीजर पेश है। उन्हें जन्मदिन की शुभकामनाएं।

पोस्टर में नयनतारा अपने दोनों हाथों में हथियार लिए नजर आ रही हैं। उनके चेहरे पर एग्रेशन साफ नजर आ रहा है। वहीं रक्कई के टीजर की बात करें सेंथिल नल्लासामी की निर्देशित फिल्म के टीजर में नयनतारा को एक ऐसी मां के अवतार में दिखाया गया है, जो अपने बच्चे की सुरक्षा के लिए योद्धा बन जाती है।

रक्कई के टीजर की शुरुआत बच्चे के रोने की आवाज से शुरू होती है। इसके बाद एक खुले मैदान की झलक दिखाई जाती है, जहां एक झोपड़ी, जिसमें से बच्चे के रोने की आवाज आती है, के बाहर मशाल लिए दुश्मन की सेना नजर आती है। इस दौरान बच्चे की झलक दिखाई जाती है, जो भूखा रहता है। इसके बाद नयनतारा की झलक दिखाई गई है। वह अपने दुश्मनों से लड़ने और अपने बच्चे को शांत कराने की तैयारी करती हैं। वह ओखली में लाल मिर्च का पाउडर तैयार करती नजर आती है।

इसके बाद वह बच्चे को दूध पिलाकर उसे झूले में सुला देती है। इस बीच दुश्मन की सेना उन पर वार करने के लिए उनकी झोपड़ी को ओर दौड़ पड़ते हैं। बच्चे को सुलाने के बाद नयनतारा हाथ में हथियार लेकर दुश्मनों से जंग करने मैदान में उतरती हैं। वह दुश्मनों को लहूलुहान करते हुई नजर आती हैं। टीजर का आखिरी में नयनतारा को झूले में सोए बच्चे साथ दिखाया जाता है। इस बीच फिल्म के टाइटल का खुलासा होता है। नयनतारा का यह एक्शन अवतार उनके फैंस को काफी पंसद आया है।

उधर, नयनतारा ने रक्कई का टीजर शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा है, एक ऐसी भूमि में जहां न्याय केवल एक स्मृति मात्र है। एक मां, जिसकी दुनिया उसका बच्चा था। लेकिन जब उसकी बच्चे की जान को एक राक्षस से खतरा होता है। तो वह भागती नहीं। वह डगमगाती नहीं। इसके बजाय, वह जंग का एलान करती है।

नयनतारा ने अपने जन्मदिन से एक दिन पहले अपने फैंस को अपनी अपकमिंग फिल्म का पोस्टर साझा किया, जिसमें वह अकेले दुश्मनों के सामने निडर होकर खड़ी नजर आ रही है। हाथ में भाला लिए नयनतारा का ये अवतार किसी बड़े युद्ध का संकेत दे रही है। पोस्टर पर बड़े अक्षरों में लिखा है, उसने जंग का एलान किया है। एक्ट्रेस के इस पोस्टर को कई सोशल मीडिया यूजर्स ने साउथ स्टार धनुष के साथ चल रहे उनके अनबन से जोड़ा है।

इससे पहले नयनतारा ने अपनी बायोग्राफी डॉक्यूमेंट्री नयनतारा: बियॉन्ड द फेयरीटेल का पोस्टर शेयर कर बताया कि उनकी डॉक्यूमेंट्री अब नेटफ्लिक्स पर उपलब्ध है। नयनतारा: बियॉन्ड द फेयरीटेल में नयनतारा के पर्सनल लाइफ से लेकर प्रोफेशनल लाइफ तक की झलक दिखाई गई है। एक्ट्रेस के करीबी लोगों ने खुद उनके जीवन के बारे में खुलासा करते हुए नजर आ रहे हैं। इस डॉक्यूमेंट्री में नयनतारा और विग्नेश की अनसीन वेडिंग की भी झलक दिखाई गई है।

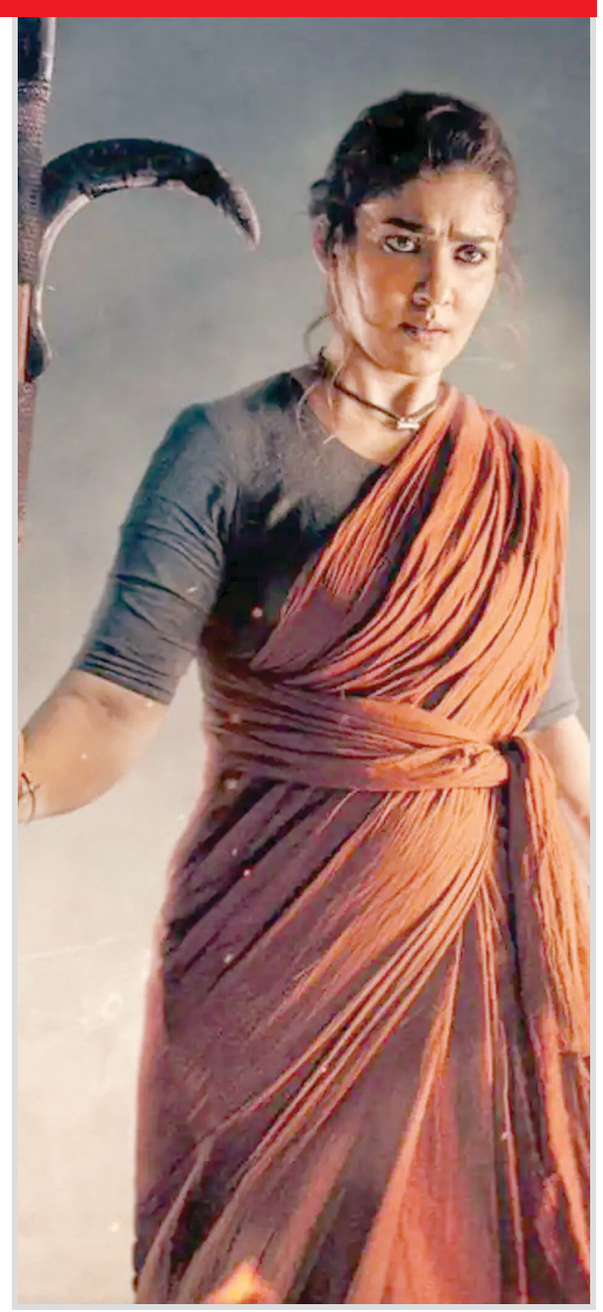

सर्दियों में हरी मटर खाने से सेहत के होते हैं ये भारी नुकसान

सर्दियों के मौसम में रोजाना फल का सेवन करना सेहत के लिए बेहद फायदेमंद माना जाता है। हेल्थ एक्सपर्ट भी नियमित फल खाने की सलाह देते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि एक फल ऐसा है जिसको सर्दियों में रोज खाने से बीमारियों दूर रहती हैं। इस फल का स्वाद बेहद लाजवाब होता है। जिसका नाम अमरूद है। अन्य फलों के मुताबिक अमरूद में कई गुना अधिक प्रोटीन और फाइबर होता है, जो स्वास्थ्य के लिए बेहद फायदेमंद होता है। हेल्थ एक्सपर्ट के मुताबिक, सर्दियों के मौसम में अमरूद खाने से पाचन तंत्र तो स्वस्थ रहता ही है साथ ही इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट और विटामिन सी शरीर को रोग प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करते हैं। आइए जानते हैं कि सर्दियों मौसम में अमरूद खाने से सेहत के फायदों के बारे में।

सर्दियों मौसम में अमरूद खाने अनगिनत फायदे-

ब्लड प्रेशर को कंट्रोल रखता है

हेल्थ एक्सपर्ट के मुताबिक, सर्दियों के मौसम में अमरूद खाना सेहत के लिए काफी फायदेमंद होता है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट और पॉलीफेनोल्स प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जो रक्त की मात्रा को कम करने में मदद करते हैं। जो मूत्र में तरल पदार्थ को कम करता है और इससे ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने में भी मदद करता है।

कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल रखता है

सर्दियों के मौसम में अमरूद खाना सेहत के लिए बेहद फायदेमंद होता है। अमरूद में विटामिन सी भरपूर मात्रा में होता है। अमरूद में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट के कारण यह एचडीएल कोलेस्ट्रॉल के अच्छे स्तर को बनाए रखता है। जो कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल रखता है।

त्वचा के लिए फायदेमंद

सर्दियों में गुलाबी या लाल अमरूद खाना स्किन के लिए बेहद फायदेमंद होता है क्योंकि अमरूद में लाइकोपीन भरपूर मात्रा में होता है, जो त्वचा को सूरज की पराबैंगनी किरणों से होने वाले नुकसान से बचाने में रक्षा करता है।

एक साल में कोरबा का विकास का पहिया तेज रफ्तार से दौड़ पड़ा, 300 करोड़ के कार्य शुरुः लखन लाल देवांगन

प्रेस क्लब के अतिरिक्त निर्माण कार्य 25 लाख के भूमि पूजन, और ऑडिटोरियम के विकास के लिए 20 लाख की घोषणा पर प्रेस क्लब ने मंत्री का जताया आभार

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर । वाणिज्य उद्योग एवं श्रम मंत्री लखन लाल देवांगन कोरबा प्रेस क्लब के तिलक भवन में आयोजित लखन का एक साल व राज्य सरकार का अमृत काल कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। मंत्री श्री देवांगन ने कहा कि 3 दिसम्बर 2023 का वह स्वर्णीम दिन जब कोरबा की जनता ने विकास, सुशासन और समृद्धि के लिए ऐतिहासिक निर्णय लेकर आम जनता ने प्रचंड जनादेश दिया था। विगत एक वर्ष में आप सभी के विश्वास पर खरा उतरते हुए कोरबा समेत प्रदेश की प्रगति में अनेक नए आयाम स्थापित किये। मोदी की गारंटी के सभी प्रमुख वादे प्रमुखता से पूरे किए गए है। जिले के 295706 और कोरबा नगर निगम क्षेत्र के 71865 माताओं और बहनों को महतारी वंदन योजना के तहत् प्रतिमाह 1000 रू. दिये जा रहे है।

उन्होंने कहा कि कोरबा विधानसभा समेत पूरे जिले के समुचित विकास (नेशनल हाईवे, बॉयपास सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य, सिंचाई, आंगनबाड़ी, पेयजल, सुरक्षा व्यवस्था, सामुदायिक भवन, मंच, पंडाल, तालाब गहरीकरण, सी.सी. रोड़, नाली, सामाजिक भवन, बिजली,) व्यवस्था के लिए कुल 1800 करोड़ से अधिक की राशि इस एक साल में स्वीकृत करायी गयी है। कोरबा विधानसभा में 300 करोड़ के कार्य शुरू करए गए ।जिनमें अधोसंरचन, विधायक मद, डीएमएफ राजस्व आपदा प्रबंधन, नगरीय निकाय, प्रभारी मंत्री मद, सहित अन्य मदो से कार्य स्वीकृत कराकर प्रारंभ कराये जा रहे है। कुछ बडे प्रोजेक्ट टेंडर प्रक्रिया में है, बहुत जल्द विकास कार्यों का श्रीगणेश होगा। बिना किसी भेदभाव के वार्डों में कार्य कराये जा रहे हैं। प्रेस क्लब तिलक भवन में अतिरिक्त निर्माण कार्य लागत 25 लाख के कार्यों का मंत्री श्री देवांगन ने भूमि पूजन किया। साथ ही प्रेस क्लब की मांग पर अतिरिक्त विकास के लिए मंत्री देवांगन ने 20 लाख की घोषणा की। प्रेस क्लब के पदाधिकारी और सदस्यों द्वारा मंत्री देवांगन का अभिनंदन और आभार जताया।

उन्होंने कहा की प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय जी, उपमुख्यमंत्री श्री अरूण साव जी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में आज कोरबा जिला विकास के नई उंचाईयों की ओर अग्रसर है। इस एक साल में हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकता शहर से लेकर पूरे जिले के सड़को के जीर्णोद्धार और निर्माण पर थी। कई वर्षों से उरगा-कोरबा-कटघोरा फोरलेन सड़क, जमीन की खरीद फरोक्त में गड़बड़ी की वजह से अटकी हुई थी। हमारे प्रयास से केन्द्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री श्री नितिन गड़करी जी ने इस मार्ग के लिए 1593 करोड़ की राशि स्वीकृत दी है। बहुत जल्द इसका निर्माण प्रारंभ होगा, इसी तरह हाल ही में कटघोरा से अंबिकापुर डबल लेन सड़क का फोरलेन करने की हरी झंडी मिल गई है। हमारा प्रयास रहा है कि कोरबा शहर के बीच से भारी वाहनों का दबाव कम हो, इसके लिए बरमपुर से प्रगतिनगर तक 8 कि.मी. लंबे बॉयपास मार्ग के लिए 83 करोड रू. की स्वीकृति उपरांत टेंडर प्रकिया प्रारंभ कर दी गई है। बहुप्रतिक्षित संजय नगर रेल्वे फाटक पर अंडरब्रिज का निर्माण 70 करोड़ रू. के लागत से होगा। इससे प्रभावित लोगों को 3.11 करोड़ का मुआवजा दिया जा चुका है। आप सभी को याद होगा 2018 में भाजपा सरकार में ढेंगुरनाला बॉयपास सड़क का डीएमएफफण्ड से निर्माण प्रारंभ किया गया था। अब पुनः 5 वर्ष पश्चात प्रारंभ करा दिया गया है। विधानसभा चुनाव से पूर्व शहर के सड़कों का आनन फानन में घटिया डामरीकरण किया गया था। पहली बारिश में ही डामरीकरण पूरी तरह से उखड गया था। हमने मानसून सिजन खत्म होते ही तत्काल डामरीकरण का कार्य पूर्ण कराया। पत्रकार मित्रों आपको याद होगा सर्वमंगला मंदिर पहुंच मार्ग बेहद जर्जर स्थिति में था। हमने सर्वमंगला मंदिर बॉयपास मार्ग का निर्माण समयवाधि में शुरू कराकर पूर्ण कराया है।

पिछले एक वर्ष में इन बड़े कार्यों की मिली स्वीकृति

टीपी नगर में वर्ल्ड क्लास इंडोर स्टेडियम, लागत 25 करोड़ की स्वीकृति, टीपी नगर न्यू बस स्टैण्ड की मरम्मत व नवीनीकरण कार्य की लागत 98 लाख रू. की स्वीकृति, इंदिरा स्टेडियम के पवेलियन, पाथवे, टायलेट ब्लाक, स्वीमिंग पुल सहित अन्य विकास कार्य 2.5 करोड़ की स्वीकृति, जिला खनिज न्यास के मद से कोरबा विधानसभा अंतर्गत 100 विभिन्न विकास कार्यों के लिए 9.19 करोड़ के कार्य प्रारंभ, सामुदायिक भवनों का निर्माण विस्तार व मरम्मत कार्य के लिए 4.90 करोड़ के कार्य प्रारंभ, 18 सामाजिक भवनों का निर्माण विस्तार व उन्नयन कार्य, लागत 2.96 करोड़ के कार्य प्रारंभ,44 सांस्कृतिक मंच एवं शेड का निर्माण लागत 3.7 करोड़ के कार्य प्रारंभ, 74 स्थानों पर सी.सी. रोड़ एवं नाली निर्माण, लागत 7.8 करोड़ के कार्य प्रारंभ, 28 आंगनबाड़ी एवं मुक्तिधाम निर्माण व मरम्मत कार्य, लागत 2.8 करोड़ के कार्य प्रारंभ और 10.27 पेयजल, प्रसाधन व अन्य भवनों का जीर्णोद्धार, लागत 1.89 करोड़ के कार्य प्रारंभ।

स्वास्थ्य, शिक्षा

शासकीय स्कूलों के 1.20 लाख बच्चों के स्वास्थ्य एवं नियमित उपस्थिति के लिए विष्णुदेव सरकार की अनूठी पहल स्कूलों में बच्चों को मिलने लगा पौष्टिक नाश्ता, दूरस्थ ग्रामीण अंचलों में सुचारू रूप से लैब टेस्ट और कन्फर्म रिपोर्ट के लिए लैब आन व्हील्स की सुरूवात की गई। इस योजना के तहत् ग्रामीणों को 53 प्रकार के टेस्ट की घर बैठे सुविधा मिल रही है, जिला खनिज न्यास मद से 22 सीएचसी और 6 पीएचसी के भवन निर्माण कार्य की स्वीकृति मिली, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र कोरबा समेत 4 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में सोनोग्राफी की सुविधा प्रारंभ की गई, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में 5 चिकित्सा विशेषज्ञ, 9 विशेषज्ञ शल्य चिकित्सक, स्टाप नर्स, लैब टेक्निशियन, फिजिंग डेमोस्टेटर, रेडियोग्राफर, फार्मसिस्ट और 4 दंत चिकित्सकों की नियुक्ति, जिले की शिक्षा व्यवस्था को बेहतर करने की दृष्टिकोण से शिक्षकों की कमी को दूर करते हुए प्राथमिक, माध्यमिक, हाईस्कूल व हायर सेकेण्डरी स्कूलों में डी.एम.एफ से मानदेय के आधार पर 517 शिक्षक व 269 भृत्य की नियुक्ति की गई है।

छोटे बच्चों को पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन विटामिन युक्त पौष्टिक आहार दें - कलेक्टर

श्रीकंचनपथ न्यूज

राजनांदगांव। कलेक्टर संजय अग्रवाल जिले में चले रहे पोट्टु लईका पहल अभियान के अंतर्गत पालक चौपाल कार्यक्रम में डोंगरगांव विकासखंड के ग्राम बोदेला आंगनबाड़ी केन्द्र पहुंचे। कलेक्टर अग्रवाल ने कहा कि जिले में कुपोषण मुक्ति के लिए पोट्टु लईका पहल विशेष अभियान चलाया जा रहा है। कम वजन वाले बच्चों के वजन में वृद्धि कर सुपोषण की श्रेणी में लाने के लिए शिशुवती माताओं एवं गर्भवती महिलाओं को जागरूक किया जा रहा है। बच्चों के वजन में वृद्धि करने और सुपोषण की श्रेणी में लाने के लिए पोट्टु लईका पहल अभियान अंतर्गत पालक चौपाल का प्रत्येक शुक्रवार को आयोजित किया जा रहा है। कलेक्टर अग्रवाल ने पालक चौपाल में कुपोषित बच्चों के माताओं को स्वास्थ्य एवं पोषण के प्रति जागरूक किया। इस अवसर पर उन्होंने सुपोषित बच्चों की माताओं को फ्ल देकर सम्मानित किया।

जल जीवन मिशन से महिलाओं के जीवन में आया बदलाव

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। छत्तीसगढ़ राज्य में जल जीवन मिशन के तहत ग्रामीण इलाकों में लगभग 80 प्रतिशत घरों में नल से जल पहुंचाने का काम पूरा हो चुका है। इस मिशन के तहत राज्य में 50 हजार ग्रामीण घरों में नल कनेक्शन दिए जाने के विरूद्ध अब तक 39 लाख 82 हजार घरों में नल कनेक्शन के माध्यम से जलापूर्ति होने लगी है। इस मिशन के तहत बीते एक वर्ष में लगभग साढ़े लाख नल कनेक्शन प्रदान किए गए हैं। जल जीवन मिशन के चलते ग्रामीण इलाकों में एक ओर जहां पेयजल की समस्या का निदान हुआ है, वहीं दूसरी ओर इस मिशन से ग्रामीण महिलाओं को बड़ी राहत मिली है। घर में पानी की व्यवस्था हो जाने से महिलाओं के चेहरे पर खुशी की चमक आई है।

दुर्ग जिले के ग्राम चिरपोटी में जल जीवन मिशन के तहत हर घर नल से जल पहुंचने से ग्रामीणों विशेषकर महिलाओं के जीवन में बड़ा बदलाव ला दिया है। पहले पानी की किल्लत से जूझ रहे इस गांव में महिलाओं को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था, लेकिन अब हर घर में नल से स्वच्छ पेयजल पहुंचने लगा है। इस योजना ने न केवल पानी की समस्या का समाधान किया, बल्कि गांव की महिलाओं के जीवन को भी पूरी तरह बदल दिया। जल जीवन मिशन की शुरुआत के बाद चिरपोटी गांव में पाइपलाइन बिछाकर हर घर में नल कनेक्शन प्रदान किया गया। इसके तहत गांव की 450 से अधिक आबादी को स्वच्छ जल आपूर्ति सुनिश्चित हुई है।

गांव की कुलेश्वरी साहू, जो 28 वर्ष की हैं, ने अपनी गर्भावस्था के दौरान पानी लाने में होने वाली कठिनाइयों को साझा करते हुए कहा, एक गर्भवती महिला के लिए दूर से पानी लाना बेहद मुश्किल होता था। मेरे छोटे बेटे को मेरी मदद करनी पड़ती थी। इससे हमारा स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा था। घर में नल की सुविधा मिलने से हमारी यह समस्या पूरी तरह खत्म हो गई है। हमारा पूरा परिवार अब इस सुविधा से खुश है।

इसी गांव की 50 वर्षीय उर्वशी साहू, जो एक गृहिणी और जलवाहिनी सदस्य हैं, ने बताया कि जल जीवन मिशन ने उनके आत्मविश्वास को बढ़ाया है। उन्होंने कहा, पहले मैं केवल घर के कामों तक सीमित थी, लेकिन अब मैंने प्रशिक्षण लिया और अन्य महिलाओं को भी प्रेरित किया। इस मिशन की वजह से मुझे दिल्ली में प्रधानमंत्री द्वारा सम्मानित होने का अवसर भी मिला, जो मेरे लिए गर्व का क्षण था। 34 वर्षीय निधृति चौहान, जो 2017 में इस गांव की बहू बनकर आईं, ने कहा, पहले मुझे पानी लाने के लिए दूर तक जाना पड़ता था, जिससे मेरा काफी समय और ऊर्जा बर्बाद होती थी। लेकिन अब जल जीवन मिशन के तहत घर में ही नल से जल की सुविधा मिलने से हमारा जीवन आसान हो गया है। इससे हमें अन्य कामों पर ध्यान देने का समय मिल रहा है।

जल जीवन मिशन के तहत चिरपोटी के हर घर को नल कनेक्शन देने के बाद महिलाओं का जीवन आसान हो गया है। अब वे पानी की चिंता से मुक्त होकर परिवार और समाज के विकास में योगदान दे रही हैं।

छत्तीसगढ़ में अब तक 32.29 लाख मीट्रिक टन धान की हुई खरीदी

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के मार्गदर्शन में प्रदेश के किसानों से सुगमता पूर्वक धान की खरीदी की जा रही है। छत्तीसगढ़ में धान 14 नवम्बर सें शुरू हुए धान खरीदी का सिलसिला अनवरत रूप से जारी है। राज्य में 14 नवम्बर से अब तक 32.29 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी हो चुकी है। राज्य में अब तक 6.80 लाख किसानों ने अपना धान बेचा है। धान खरीदी के एवज में इन किसानों को बैंक लिकिंग व्यवस्था के तहत 6807 करोड़ 82 लाख रूपए का भुगतान किया गया है। धान खरीदी का यह अभियान 31 जनवरी 2025 तक चलेगी।

खाद्य विभाग के अधिकारियों ने आज यहां बताया कि इस खरीफ वर्ष के लिए 27.68 लाख किसानों द्वारा पंजीयन कराया गया है। इसमें 1.45 लाख नए किसान शामिल है। इस वर्ष 2739 उपार्जन केन्द्रों के माध्यम से 160 लाख मीट्रिक टन

धान खरीदी अनुमानित है।

खाद्य विभाग के अधिकारियों ने बताया कि आज 6 दिसम्बर को 66181 किसानों से 2.95 लाख मीट्रिक टन धान खरीदी की गई है। इसके लिए 76378 टोकन जारी किए गए थे।

राज्य सरकार धान उपार्जन केन्द्रों में शिकायत एवं निवारण के लिये हेल्प लाइन नंबर जारी किए है, जिसका नं. 0771-2425463 है। धान बेचने वाले कोई भी किसान इस हेल्पलाईन नम्बर पर फोन कर अपनी समस्यओं का समाधान कर सकते है।

खाद्य विभाग के अधिकारियों ने बताया कि उपार्जन केन्द्रों में धान विक्रय हेतु किसानों द्वारा टोकन आवेदन समिति माड्यूल एवं टोकन तुहर हाथ एप्प के माध्यम से किये जाने की सुविधा प्रदाय की गई है। कुल टोकन आवेदन का 40 प्रतिशत समिति माड्यूल एवं 60 प्रतिशत एप्प के माध्यम से आरक्षित किया गया है। जिन कृषकों को एप्प के माध्यम से टोकन आवेदन करने में कठिनाई हो रही हो, वे समिति में आपरेटर के माध्यम से टोकन आवेदन करा सकते हैं। किसानों द्वारा आवेदन के दौरान आवश्यक प्रविष्टि करने के उपरांत आवेदन की तारीख से लेकर 15 जनवरी 2025 तक रिक्त स्लॉट में धान विक्रय हेतु दिवस का चयन किया जा सकता है। लघु एवं सीमांत कृषकों को 02 टोकन एवं दीर्घ कृषकों 03 टोकन की सुविधा प्रदाय की गई है।

भारत सरकार की नवीन बारदाना नीति अनुसार धान का उपार्जन नये एवं पुराने बारदानों में 50 अनुपात 50 में किया जाना है। प्रदेश में अनुमानित धान उपार्जन 160 लाख टन के आधार पर सभी उपार्जन केन्द्रों में पर्याप्त बारदानों की व्यवस्था कर ली गई है। उपार्जन केन्द्रों में पुराने बारदानें के रूप में मिलर बारदाना, पीडीएस बारदाना, समिति द्वारा उपलब्ध कराये गये बारदानों का उपयोग किया जा रहा है। विशेष परिस्थिति में किसान बारदाना का भी उपयोग किया गया है, जिसका 25 रू. नग के मान से किसानों को भुगतान हेतु राशि 11 करोड़ 23 लाख रूपए अपेक्स बैंक को दी जा चुकी है।

धान खरीदी केन्द्रों में 72,194 गठान बारदाना उपलब्ध

समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन के लिए कुल 4 लाख गठान नये बारदानों की आवश्यकता है, जिसके विरूद्ध 3.51 लाख नये बारदानें प्रदेश को प्राप्त हो गए है, शेष बारदानें आगामी 15 से 20 दिवसों में प्राप्त हो जायेगें। अभी तक धान उपार्जन में पीडीएस बारदाने 32392 गठान, मिलर बारदानें 23078 गठान, किसान बारदानें 10176 गठान उपयोग किये जा चुके है। उपार्जन केन्द्रों में पीडीएस बारदाने 18985 गठान, मिलर बारदानें 54209 गठान उपयोग हेतु उपलब्ध है। वर्तमान में प्रदेश के किसी भी उपार्जन केन्द्र में बारदानों की कमी नहीं है।

विकसित राज्य बनाने विभिन्न योजनाओं का किया जा रहा क्रियान्वयन : राजस्व मंत्री टंक राम वर्मा

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। राजस्व मंत्री टंक राम वर्मा ने बालौदाबाज़ार जिले के ग्राम पंचायत बुडगहन में नवनिर्मित महतारी सदन,पानी टंकी और राशन दुकान का लोकार्पण किया।पहले किश्त में बालौदाबाज़ार विधानसभा के 40 ग्रामों में महतारी सदन निर्माण का कार्य तेजी से हो रहा है। इसी तरह क्षेत्र के विभिन्न स्कूलों में प्रार्थना शेड निर्माण के अलावा शौचालय,पानी और बिजली की समुचित व्यवस्था की जा रही है। इस दौरान उन्होंने आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका तथा मितानिनों का सम्मान किया।

कार्यक्रम में मंत्री श्री वर्मा ने कहा कि छत्तीसगढ़ को विकसित राज्य बनाने के लिए विभिन्न योजनाओं का संचालन सरकार द्वारा किया जा रहा है। पिछले एक वर्ष में विभिन्न निर्माण कार्यो के साथ-साथ बस्तर में शांति स्थापित करने नक्सल उन्मूलन में तेजी से कार्य किया जा रहा है। बस्तर ओलंपिक के विभिन्न खेलों में बस्तर संभाग के 1 लाख 65 हज़ार युवक-युवतियां हिस्सा ले रहे है। बस्तर ओलंपिक देश मे अपनी तरह का बहुत बड़ा खेल आयोजन है। उन्होंने कहा कि खेल के माध्यम से व्यक्ति को अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने का अवसर मिलता है,जिससे व्यक्ति की छिपी प्रतिभा का ज्ञान लोगो को होता है। मंत्री श्री वर्मा ने कहा कि हमे परस्पर सहयोग और समन्वय के साथ विकास कार्यो में सहभागी बनकर ग्राम के विकास में भागीदारी अदा करना चाहिए,जिससे ग्राम को आदर्श ग्राम के रूप में स्थापित कर सके।

इस अवसर पर जिला पंचायत बालौदाबाज़ार के अध्यक्ष राकेश वर्मा, सदस्य अदिति बघमार, जनपद सदस्य श्रीमती उमा अनंत, सरपंच श्रीमती मानेश्वरी साहू सहित बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित थे।

आत्मानंद स्कूल में चित्रकला एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन

श्रीकंचनपथ न्यूज

गरियाबंद। स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल गरियाबंद में एक्सिस बैंक द्वारा स्प्लैश आर्ट के अंतर्गत 7 से 10 वर्ष तथा 11 से 14 वर्ष तक के बच्चों के बीच चित्रकला एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।जिसमें 7 से 10 वर्ष कैटेगरी में चित्रकला के क्षेत्र में उज्जवल दीवान प्रथम,नक्ष चौबे द्वितीय एवं हर्षिता मोगरे तृतीय स्थान प्राप्त किया ।निबंध लेखन के क्षेत्र में मदीहा कुरैशी प्रथम नोशी दीवान द्वितीय एवं आरना बनसोर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।11 से 14 वर्ष कैटेगरी में चित्रकला के क्षेत्र में निशा साहू प्रथम,इंद्राणी साहू द्वितीय एवं खुशी सिन्हा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। निबंध लेखन के क्षेत्र में लक्ष्मी साहू प्रथम सौम्य पटेल द्वितीय एवं सौरभ सोनी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इस प्रतिस्पर्धा का आयोजन एक्सिस बैंक के इंचार्ज एवं उनके सहयोगी तथा विद्यालय के प्राचार्य दीपक कुमार बौद्ध के तत्वावधान में सम्पन्न कराया गया।

प्रतियोगिताओं में विजयी रहे छात्र-छात्राओं को एक्सिस बैंक के शाखा प्रबंधक तथागत गुहा ठाकुर,एवं सहयोगी विकास कुमार,साहू राकेश निर्मलकर तथा विद्यालय प्राचार्य के करकमल द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं मेडल देकर सम्मानित किया गया। कैलाश कोशरे,पुरुषोत्तम साहू राकेश कुमार साहू और शिक्षक शिक्षिकाएं उपस्थित रहें।

चौरसिया ज्वेलर्स
आकर्षक सोने चांदी के आभूषणों के निर्माता एवं विक्रेता
बेन्देक्स एवं ग्रहरत्न उपलब्ध यहां
उचित ब्याज दर पर गिरवी रखी जाती है
मुक्तिधाम रोड, रामनगर, सुपेला, भिलाई
9827938211, 9827171332

Jaquar Roca Parryware AJAY FLOWLINE
Shri Vijay Enterprises
Sanitarywares, Tiles, CPVC Pipes & Bathroom Fittings etc.
Supela Market, Bhilai
PH. 0788-4030909, 2295573

CAR DECOR
House Of Exclusive Seat Cover, Car Stereos Matting & Sun Control Film & Other Accessories
Shop No.3 Nafish Tower. Opp. Indian Coffee House, Akashganga, Bhilai
Mo.9300771925, 0788-4030919
K. Satyanarayan

ॐ SAIRAM
Mobile Accessories
मोबाईल शॉप में कार्य करने हेतु लड़को की आवश्यकता है
7000415602
Shop No. 78, Himalaya Complex, Supela, Bhilai

ROCKEY INDUSTRIES
FURNITURE PALACE
Deals in: (Steel & Wooden) Luxury & Imported Furniture
Akash Ganga, Supela, Bhilai Ph. 2296430

दास गार्मेन्ट्स
जींस, शर्ट, टी-शर्ट, फ्राक सूट, फ्राक, फैंसी सलवार सूट एवं किट्स वियर,अंडर गारमेन्ट्स, गाउन के लेटेस्ट कलेक्शन
एक बार अवश्य पधारें
गणेश मार्केट, गुरुद्वारा, रोड सुपेला, भिलाई, 7828248067

Ashok
JEWELLERY
Gifts ● Toys ● Cosmetics
Perfumes ● Sia Jewellery
Beside Parakh Jewellers, Akash Ganga, Supela, Bhilai
Hello: 0788-4052727
Mukesh Jain 9009959111
Rishabh Jain 8103831329

खास खबर

कोचिए पर आबकारी विभाग की कार्यवाही, शराब जब्त

रायपुर। सचिव सह आबकारी आयुक्त सुश्री आर. शंगीता एवं कलेक्टर गौरव सिंह के निर्देश पर आबकारी विभाग जिला रायपुर द्वारा अवैध मदिरा के विरुद्ध कार्यवाहियाँ जारी हैं । इसी अनुक्रम में कंपोजिट देशी मदिरा दुकान गंजपारा के पास आरोपी अमन सोनी के आधिपत्य से 390 नग पाव (70.2 बल्क लीटर) देसी मदिरा मसाला शोले जप्त कर छत्तीसगढ़ आबकारी अधिनियम 1915 की धारा 34(2),59(क) का प्रकरण कायम कर आरोपी को जेल दाखिल किया गया। उल्लेखनीय है कि लगातार शिकायत प्राप्त हो रही थी कि गंजपारा में प्रातः 5:00 बजे से कुछ लोगों द्वारा अवैध मदिरा विक्रय किया जाता है, आरोपी अमन से पूछताछ करने पर उसने बताया कि आसपास के कई देसी मदिरा दुकान से इकट्ठा करते हैं तथा रात्रि में दुकान बंद होने के बाद एवं प्रातः दुकान खुलने से पहले तक घूम घूम कर विक्रय करते हैं। उपरोक्त कार्यवाही में सहायक जिला आबकारी अधिकारीगण वैभव मित्तल, टेकबहादुर कुर्रे एवं आबकारी आरक्षक चंदेलाल गायकवाड़ का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

भालू ने ग्रामीण पर किया हमला

जगदलपुर। नगरनार थाना क्षेत्र अंर्तगत ग्राम उलनार निवासी ग्रामीण जगबंधु बघेल अपने घर से कुछ दूरी पर स्थित खेत से तार निकालने के लिए गया हुआ था, इसी दौरान एक वन्य प्राणी भालू ने उसके ऊपर हमला कर दिया। किसी तरह ग्रामीण जगबंधु बघेल ने भालू से अपनी जान को बचाते हुए घर पहुंचा, जिसे उपचार के लिए मेकॉज में भर्ती किया गया है।

ग्रामीण के परिजनों ने बताया कि उलनार माझिपारा निवासी जगबंधु बघेल पिता चैतू बघेल उम्र 30 वर्ष अपने घर से 3 किमी दूर खेत में लगे तार को निकाल रहा था, इसी दौरान एक भालू ने गुरूवार सुबह उसके ऊपर हमला कर दिया। अचानक से भालू के हमले से ग्रामीण कुछ समझ पाता इससे पहले ही भालू ने ग्रामीण के हाथ को पकड़ लिया। ग्रामीण ने हिम्मत दिखाते हुए भालू से करीब 20 मिनट तक संर्घष के बाद भालू भाग गया, ग्रामीण घायल अवस्था मे अपने घर पहुंचा, जिसके बाद परिजनों ने ग्रामीण को उपचार के लिए मेकॉज में भर्ती किया गया है। जहां उसका उपचार चल रहा है।

चाकू से हमला कर दो मोबाइल लूटकर हुए फरार

कांकेर। चारामा थाना क्षेत्र अंर्तगत ग्राम रतेसरा-कोचवाही में गुरूवार सुबह मॉर्निंग वॉक पर निकले दो युवकों पर लूट के इरादे से आये तीन अज्ञात नकाबपोश बाईक सवार हमलावरों ने चाकू से हमला कर दिया। घायल युवक योगेश्वर कांगे ने बताया कि वह सुबह मॉर्निंग वॉक पर निकला था। इसी दौरान बाइक सवार तीन नकबपोश युवक पहुंचे और पेट्रोल पंप का पता पूछने लगे। पता बताने के बाद आरोपियों ने पैसे और मोबाइल देने की मांग की, मना करने पर चाकू से हमला कर दो मोबाइल लूट कर फरार हो गये।

पुलिस कर्मियों के लिए खुशखबरी, किसी भी बैंक में खुलवा सकते हैं सैलरी एकाउंट

8 बैंकों से हुआ सरकार का एमओयू

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। छत्तीसगढ़ में पुलिस कर्मियों के लिए एक बड़ी खुशखबरी है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की पहल सरकार ने 8 प्रमुख बैंकों के साथ पुलिस सैलरी पैकेज के तहत समझौता (एमओयू) किया है। इस समझौते में भारतीय स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, बैंक ऑफबड़ौदा, कैनरा बैंक, एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, एक्सिस बैंक और आईडीबीआई बैंक शामिल हैं। पुलिस कर्मी अब इन 8 बैंकों में से किसी भी बैंक में अपनी सुविधा के अनुसार सैलरी अकाउंट खुलवा सकते हैं।

छत्तीसगढ़ पुलिस विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों को आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए राज्य सरकार ने एक बड़ा कदम उठाया है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने इस पहल को पुलिस कर्मियों के लिए सुरक्षा और सहयोग का एक मजबूत आधार बताया। उन्होंने कहा कि यह समझौता पुलिस विभाग के कर्मचारियों के प्रति राज्य सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि यह समझौता न केवल पुलिस कर्मियों को आर्थिक रूप से सशक्त करेगा, बल्कि उनके परिवारों की आवश्यकताओं को भी पूरा करेगा। यह पहल छत्तीसगढ़ सरकार की सुशासन और पारदर्शिता की नीति को और मजबूत करेगी और पुलिस कर्मियों के कार्यक्षमता और मनोबल में सकारात्मक परिवर्तन लाएगी।

पुलिस विभाग के कल्याण की दिशा में ऐतिहासिक कदम

उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा ने इस पहल को पुलिस विभाग के कल्याण की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम बताया। उन्होंने कहा कि पुलिस कर्मियों को यह स्वतंत्रता दी गई है कि वे अपनी सुविधा और आवश्यकता के अनुसार किसी भी बैंक में सैलरी खाता खोल सकते हैं। इसके लिए किसी भी प्रकार की बाध्यता या अतिरिक्त शुल्क नहीं होगा। सभी बैंकों से प्राप्त प्रस्ताव पुलिस इकाइयों को भेजे जाएंगे ताकि पुलिस कर्मी अपनी आवश्यकताओं के अनुसार सबसे उपयुक्त बैंक का चयन कर सकें।

बीमा की भी मिलेगी सुविधा

यह समझौता पुलिस कर्मियों और उनके परिवारों के लिए कई लाभ प्रदान करेगा। इसमें सामान्य मृत्यु के मामलों में 1 लाख से 10 लाख तक की जीवन बीमा राशि, दुर्घटना में मृत्यु के मामलों में 10 लाख से 1 करोड़ तक की सहायता, स्थायी विकलांगता के मामलों में 30 लाख से 1 करोड़ तक और आंशिक विकलांगता के लिए 22.5 लाख से 1 करोड़ तक की बीमा राशि का प्रावधान शामिल है। बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए 4 लाख से 20 लाख तक और कन्या विवाह के लिए 5 लाख से 10 लाख तक की आर्थिक सहायता उपलब्ध होगी। नक्सल हिंसा में शहीद होने वाले पुलिस कर्मियों के परिवारों के लिए 10 लाख से 50 लाख तक की सहायता राशि प्रदान की जाएगी।

सड़क दुर्घटना में कमी लाने पुलिस अधीक्षक ने किया घटना स्थल का निरीक्षण

धमतरी (ए.)। पुलिस अधीक्षक धमतरी आंजनेय वार्ष्णेय के निर्देशानुसार थाना कुरूद, मगरलोड के क्षेत्रान्तर्गत हो रही सड़क दुर्घटनाओ में कमी लाने के लिए दुर्घटनाजन्य क्षेत्र का चिन्हांकन कर दुर्घटनाओं में कमी लाने,आमजन के लिए सुगम,सुरक्षित यातायात व्यवस्था बनाने के लिए उप पुलिस अधीक्षक यातायात मणीशंकर चन्द्रा के द्वारा चिन्हाकिंत दुर्घटनाजन्य स्थल थुहा, कोलियारी-भखारा मोंड़, चरमुड़िया मोंड़, कुरूद बायपास, कुरूद भारतमाला एंट्रीगेट 01 उमरदा, भरदा मोंड़ कुरूद, कुहकुहा मोंड़, कुहकुहा हनुमान मंदिर, मौरीकला मोंड़ नारी, इनवेचंर स्कूल कुरूद, किसान राईस मील कुरूद, छत्तीसगढ़ महतारी कुरूद, सर्वेश्वर पेट्रोल पंप कुरूद, राजू ढाबा कुरूद,सुनीलम पेट्रोल पम्प डांडेसरा, छाती बस स्टैण्ड का निरीक्षण किया गया।

निरीक्षण में पाया गया कि सूचनात्मक बोर्ड, संकेतात्मक बोर्ड की कमी होने, मार्ग में बने मीडियन में कासिंग की कमी होने एवं ग्रामीणों द्वारा अपने सुविधा के लिए कासिंग बनाकर रांग साईड चलने से दुर्घटना घटित हो रही है। दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए मुख्य मार्ग में मिलने वाले सहायक मार्ग में गति नियंत्रण हेतु रंबल स्ट्रीप, सहायक मार्ग से पहले दोनो ओर 50-50 मीटर पूर्व सूचनात्मक एवं संकेतात्मक बोर्ड लगाने, ग्रामीणों द्वारा अपने सुविधानुसार मीडियन में बनाये अनावश्यक कासिंग को बंद करने, स्पीड लिमिट का बोर्ड लगाने, मुख्य मार्ग से लगे पेट्रोल पंप के पास मार्ग का चौड़ीकरण करते हुए कर्व रोड बनाने, ग्राम डांडेसरा से डाही मोंड़ के आगे सुनील पेट्रोल पंप तक में सुनील पेट्रोल पंप के आगे कासिंग तक मीडियन में डिवाईडर को आगे तक बनाने दुर्घटनाजन्य क्षेत्र का बोर्ड लगाने, लोक निर्माण विभाग एवं राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण, पीएमजीवाय को पत्राचार कर निर्देशानुरूप सुरक्षात्मक उपाय करने निर्देशित किया गया है।

क्रेटा कार ने बुजुर्ग को रौंदा दोनों घायल

रायपुर। पचपेड़ी नाका ओवर ब्रिज के पास अनियंत्रित क्रेटा कार ने शनिवार की अलसुबह सुबह 7 बजे डिवाइडर से जा टकराई, इस दौरान ब्रिज के पास पैदल चल रहे बुजुर्ग उसने अपनी चपेट में ले लिया जिसे वह घायल हो रहा। राहगिरों की मदद से बुजुर्ग और क्रेडा चालक को आस के नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां बुजुर्ग की हालत गंभीर बताई जा रही है। सूचना मिलते ही टिकरापारा पुलिस भी मौके पर पहुंच गई और क्रेडा कार को जप्त करने के बाद साथ ही चालक के खिलाफ मामला दर्ज करते हुए आगे की जांच में जुट गई है।

11 लाख के ईनामी 5 नक्सलियों ने किया आत्मसमर्पण

श्रीकंचनपथ न्यूज

बीजापुर। जिले में चलाए जा रहे नक्सल उन्मूलन अभियान के तहत छत्तीसगढ़ नक्सलवाद उन्मूलन एवं पुनर्वास नीति एवं नियद नेल्ला नार योजना तथा अति संवेदनशील अंदरूनी क्षेत्रों में लगातार कैम्प स्थापित होने से पुलिस के बढ़ते दबाव के फलस्वरूप नक्सली संगठन में सक्रिय 11 लाख के ईनामी 5 नक्सलियों 1. संतू कोड़मे, 2. पायकू पूनेम , 3. गुडडू हपका , 4. सोमारू माड़वी एवं 5. भीमा कश्यप ने बीजापुर एसपी डॉ.जितेन्द्र यादव, सीआरपीएफ 202 कमांडेंट अमित कुमार, उप पुलिस अधीक्षक सुदीप सरकार व अन्य सीआरपीएफ व पुलिस के अधिकारियों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया है। इनमें 8 लाख रुपए के ईनामी (पीएलजीए) कंपनी नम्बर के 2 सदस्य, 2 लाख रुपए के ईनामी गंगालूर एरिया कमेटी पार्टी सदस्य। साथ ही 1 लाख का ईनामी जनताना सरकार अध्यक्ष शामिल है। आत्मसमर्पण करने पर इन्हें उत्साहवर्धन हेतु शासन की आत्मसमर्पण एवं पुनर्वास नीति के तहत 25-25 हजार रुपए नगद प्रोत्साहन राशि प्रदान किया गया है। विदित हो कि वर्ष 2024 में अबतक कुल 189 नक्सलियों ने पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण किया है। वहीं विभिन्न नक्सली वारदातों में शामिल 473 नक्सलियों को गिरफ्तार किया गयाद्य है।

पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार आत्मसमर्पित नक्सली 1. संतू कोड़मे के संगठन में वर्ष 2013 में जीआरडी सदस्य के पद पर संगठन में भर्ती हुआ। वर्ष 2015 में गंगालूर एरिया कमेटी अंतर्गत पीएलजीए सदस्य के पद पर कार्य किया। वर्ष 2018 से अब तक पश्चिम बस्तर डिवीजन में कंपनी नम्बर 02 के सदस्य के पद पर कार्य किया। वर्ष 2018 में ग्राम केशकुतूल से भैरमगढ़ जाने वाले मार्ग पर पुलिस पार्टी पर एम्बुश लगाकर फायरिंग करने की घटना में शामिल। वर्ष 2020 में ग्राम मिनपा में पुलिस पार्टी पर एम्बुश लगाकर फायरिंग करने की घटना में शामिल जिसमें 17 पुलिसकर्मी शहीद हुए थे। वर्ष 2020 में ग्राम मनकेली व पेददाकोरमा के बीच जंगल में पुलिस पार्टी पर फायरिंग करने की घटना में शामिल था। वर्ष 2020 में ग्राम नड़पल्ली के पास पुलिस पार्टी पर फायरिंग करने की घटना में शामिल था। जिसमें 03 पुलिसकर्मी शहीद हुए थे। वर्ष 2020 में बैलाडिला प्लांट से बारूद लूटने की घटना में शामिल था।

पायकू पूनेम, माओवादी संगठन में वर्ष 2017 में ग्राम पुसनार के बाल संगम सदस्य के पद पर संगठन में भर्ती हुआ। वर्ष 2019 में पीएलजीए सदस्य के पद पर संगठन में कार्य किया। वर्ष 2023 में गंगालूर एरिया कमेटी पार्टी सदस्य के पद पर कार्य किया। वर्ष 2020 में ग्राम पीडिया के लेकामपारा में जनअदालत लगाकर 04 ग्रामीणों को पुलिस मुखबिरी के शक में हत्या करने की घटना में शामिल। वर्ष 2021 में गंगालूर से पुसनार जाने वाले मार्ग को जगह- जगह गडढ़ा खोदकर मार्ग अवरूद्ध करने की घटना में शामिल। वर्ष 2021 में ग्राम बुरजी के जंगल में आईईडी लगाने की घटना में शामिल ।

गुडडू हपका, माओवादी संगठन में वर्ष 2007 में ग्राम पदेड़ा के बाल संगम सदस्य के पद पर संगठन में भर्ती हुआ। वर्ष 2015 में सीएनएम सदस्य के पद पर कार्य किया। वर्ष 2018 में सीएनएम अध्यक्ष के पद पर कार्य किया। वर्ष 2024 से अब तक पदेड़ा आरपीसी जनताना सरकार अध्यक्ष के पद पर कार्यरत था। वर्ष 2010 में बीजापुर से गंगालूर जाने वाली मार्ग में जगह जगह गड्ढ़ा खोदकर मार्ग अवरूद्ध करने की घटना में शामिल। वर्ष 2011 में पोंजेर व पदेड़ा के बीच जंगल में फायरिंग करने की घटना में शामिल। वर्ष 2020 में पदेड़ से पेददाकोरमा जाने वाली मार्ग में जगह जगह गड्ढ़ा खोदकर मार्ग अवरूद्ध करने की घटना में शामिल। वर्ष 2020 में पदेड़ा जंगल में पुलिस को नुकसान पहुँचाने हेतु आईईडी लगाकर विस्फोट करने की घटना में शामिल। वर्ष 2023 में विधानसभा चुनाव के दौरान ग्राम पदेड़ा नयापारा के पास पोलिंग बुथ पर फायरिंग करने की घटना में शामिल।

सोमारू माड़वी पिता गडडा निवासी पोनड़वाया, थाना कुटरू जिला बीजापुर , माओवादी संगठन में वर्ष 2023 दिसम्बर में नेशलन पार्क एरिया कमेटी अन्तर्गत पीएलजीए सदस्य के रूप में संगठन में शामिल हुआ ।

भीमा कश्यप पिता आयतु कश्यप उम्र 32 वर्ष जाति मुरिया निवासी बरसेपाल थाना कोड़ेनार जिला बस्तर , माओवादी संगठन में वर्ष 2021 फरवरी में कुतुल आरपीसी मिलिशिया प्लाटून सदस्य के रूप में संगठन मे शामिल हुआ।

10 किलो गांजा पहुंचाने का मिलता है 6 हजार, दुर्ग में पकड़ाए युवकों ने खोले राज, मास्टर माइंड की तलाश

श्रीकंचनपथ न्यूज

भिलाई। गांजा तस्करी के मामले में दुर्ग पुलिस ने दो युवकों को होटल से गिरफ्तार किया है। ओड़िशा से लेकर दुर्ग पहुंचे युवक उक्त गांजा को गोरखपुर उत्तर प्रदेश ले जाने की तैयारी में थे। दुर्ग से निकलने वाली नवतनवा एक्सप्रेस से वे सीधा गोरखपुर पहुंचते लेकिन इससे पहले की पुलिस के हत्थे चढ़ गए। पुलिस की पूछताछ में पता चला कि युवक कुरियर की तरह काम कर रहे थे। 10 किलो गांजा पहुंचाने के एवज में यूपी का शातिर इन्हें 6 रुपए देता था। फ्लिहाल दुर्ग कोतवाली पुलिस आगे की कार्रवाई कर रही है।

दरअसल पुलिस को सूचना मिली कि नलघर के पास एक होटल में दो युवक ठहरे हुए हैं। इन युवकों के पास कुछ संदिग्ध पैकेट रखे हुए हैं। सूचना के बाद थाना कोतवाली की टीम ने दबिश दी और वहां से शैलेन्द्र कुमार पाठक (46) व शैलेष कुमार प्रसाद (24) को हिरासत में लिया। पूछताछ में दोनों ने बताया कि वे कबीर नगर गोरखपुर उत्तरप्रदेश के रहने वाले हैं। दोनों के पास क्रमशः 14-14 किलो गांजा बरामद किया गया तो बैग में रखा हुआ था। गांजा की कुल कीमत 5 लाख 60 रुपए आंकी गई है। वहीं एक रियलमी का मोबाइल भी जब्त किया गया।

6 हजार रुपए के लिए कर रहे थे कुरियर का काम

एएसपी अभिषेक झा ने बताया कि गांजा का रैकेट बहुत बड़ा है। पूछताछ में आरोपियों से पता चला कि वे केवल कुरियर बॉय की तरह काम कर रहे हैं। यूपी में बैठा सरगना इन्हें 10 किलो गांजा पहुंचाने के एवज में 6 रुपए देता था। आरोपियों ने बताया कि वे उक्त गांजा गोरखपुर ले जा रहे थे। ओड़िशा से गांजा लेकर पहले वे अंबिकापुर पहुंचे। फिर पता चला कि गोरखपुर के लिए दुर्ग से नवतनवा एक्सप्रेस सीधी ट्रेन है उससे जाना सेफरहेगा। इसके बाद दोनों अंबिकापुर से रायपुर पहुंचे और रायपुर से दुर्ग।

नवतनवा से गोरखपुर जाने की थी तैयारी

दुर्ग में कमरा लेकर रह रहे थे और शुक्रवार को नवतनवा से गोरखपुर जाना था। इससे पहले ही मुखबिर की सूचना पर दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया। इस मामले में इनका एक साथी फरार है जिसकी तलाश की जा रही है। आरोपियों के खिलाफ स्वापक औषधि और मनः प्रभावी पदार्थ अधिनियम, 1985 20 (बी) के तहत् कार्यवाही की गई है। इस पूरी कार्रवाई में एएसआई पूरनदास, प्रधान आरक्षक चेतन साहू, योगेश चंद्राकर, आरक्षक उत्कर्ष सिंह, प्रशांत पाटनकर, अलाउद्दीन शेख, सुरेश जायसवाल, नवीन यादव की सराहनीय भूमिका रही।

टायर फटने से तीन की मौत, दो घायल

सूरजपुर। मनेंद्रगढ़ में शादी समारोह निपटाकर अंबिकापुर लौट रहे स्कॉर्पियों सवार 7 लोगों में से 3 की घटनास्थल पर ही मौत हो गई, वहीं दो लोग घायल हो गए जिनका इलाज अंबिकापुर अस्पताल में चल रहे है। यह हादसा चंदरपुर के पास हुआ स्कॉर्पियों का टायर अचानक से फट गया। सूचना मिलते ही पुलिस घटनास्थल पर पहुंचकर जांच में जुट गई है। प्रत्यक्षदर्शीयों ने बताया कि सुबह करीब 3 बजे तेज आवाज सुनाई दी जिसके बाद गांव के लोग बाहर निकले तो देखा कि चार लोग गाड़ी के चक्के के ऊपर थे, बाकि लोग अंदर में फंसे हुए थे। जिसके बाद उन्होंने सभी को बाहर निकाला फिर अस्पताल लेकर जहां जहां दो महिला समेत एक की मौत हो चुकी थी। वहीं दो अन्य घायल का इलाज अस्पताल में किया जा रहा है। बताया जाता हैं कि स्कॉर्पियो में सात लोग अंबिकापुर से मनेंद्रगढ़ एक शादी समारोह में गए हुए थे। जहां से देर रात लौटते समय चंदरपुर के पास वाहन का टायर फट गया। जिसके कारण वाहन अनियंत्रित होकर पलट गया और यह हादसा घटित हो गया।

दुल्हन बैंगल्स & फैंसी

RAKESH SINGH
Mob.-9840760388
7987759030
Specialist : Wedding mix match bangles, Glass bangle, Plastic bangle. Saree pin, Bindi, Rubber Band. Bracelet, Butter Fly, Ear ring and many more
पुष्पांजलि स्वीट्स के बाजू में, कृष्णा टाकिज रोड, रिसाली, भिलाई

भिलाई की सबसे बड़ी चुड़ी की दुकान
निखार बैंगल
मो.- 9826186026
Shop-47, 'A' Market, Sec-6, Bhilai Nagar, Distt., Durg (C.G.)

भारतीय बैग हाउस
फैंसी स्ट्राली, स्कूल बैग, ऑफिस बैग, सफर बैग, लेपटॉप बैग, फैंसी छतरी, रेनकोट इत्यादि के विक्रेता
V.I.P happy journey
AMERICAN TOURISTER

कृष्णा टाकीज रोड, बैंक ऑफ बडौदा के बाजू में रिसाली भिलाई, संजय गुप्ता : 93003-77572

भिलाई मसाला उद्योग

शुद्ध कुटे हुए मसाले,पापड़, अचार, बड़ी, जड़ी-बूटी, जचकी का सामान इत्यादि
128, ए- मार्केट, सेक्टर-6, भिलाई, फोन. 2284508, मो. 9826137766

राकेश ट्रेडर्स
विगत 6 वर्षों से यह दुकान पानी टंकी के सामने स्थानांतरित हो गई है।
Dealers
Marbles, Grinight, Black Stone, Nano & Double Charge Verified Tiles Digital Wall & Floor Tiles Cement Coloru etc.
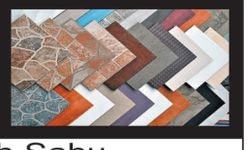
रायपुर रेट पर माल उपलब्ध | Rakesh Sahu 9302443750, 9907127357
Krishna Talkies Road, Beside Hariom Furniture, Risali, Bhilai - 490006

श्रीकंचनपथ न्यूज

पंडो जनजाति के उत्थान हेतु मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का विशेष प्रयास

मूलभूत सुविधाओं और जनकल्याणकारी योजनाओं से जोड़ने विशेष शिविरों का हो रहा है आयोजन

रायपुर। छत्तीसगढ़ राज्य की विशेष पिछड़ी जनजातियों में पंडो जनजाति का नाम प्रमुखता से आता है। यह जनजाति राज्य के दूर-दराज इलाकों में निवास करती है, जहां मूलभूत सुविधाओं का अभाव और शासन की योजनाओं तक पहुंच की समस्या लंबे समय से बनी हुई थी। इस समस्या का समाधान करने के लिए छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में सूरजपुर जिला प्रशासन द्वारा महत्त्वपूर्ण कदम उठाया गया है। सूरजपुर जिले में पंडो जनजाति को मूलभूत सुविधाओं और शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं से जोड़ने के लिए विशेष शिविरों का आयोजन संपूर्णता अभियान के तहत प्रत्येक बुधवार को किया जा रहा है, जो कि उनकी विकास यात्रा में एक निर्णायक पहल साबित हो रही है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने सदैव समाज के सबसे पिछड़े और हाशिए पर खड़े समुदायों के विकास पर विशेष ध्यान देने की बात कही है। उनकी यह मान्यता है कि समाज के हर वर्ग को समान अवसर और सुविधा मिलनी चाहिए, चाहे वह किसी भी भौगोलिक स्थिति में क्यों न हो। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय की इस सोच को मूर्त रूप प्रदान करते हुए पंडो जनजाति जैसी विशेष पिछड़ी जनजातियों को शासकीय योजनाओं से जोड़ने के लिए जिला प्रशासन द्वारा प्रयास किया जा रहा है, ताकि इन समुदायों का समुचित विकास हो सके और उन्हें समाज की मुख्यधारा में लाया जा सके। इसी क्रम में पंडो जनजाति के विकास की दिशा में ठोस कदम उठाते हुए सूरजपुर जिले के विभिन्न ग्राम पंचायत भवनों में विशेष शिविरों का आयोजन इस उद्देश्य से किया जा रहा है कि पंडो जनजाति के लोगों को शासन की योजनाओं का संपूर्ण लाभ पहुंचाया जा सके।

पण्डो जाति के लिए विशेष शिविरों का आयोजन इनके विकास की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। विशेष शिविरों के द्वारा इस जनजाति के प्रत्येक परिवार को शासकीय योजनाओं से जोड़ा जा रहा है। इन शिविरों का आयोजन 18 दिसंबर 2024 तक जिले के विभिन्न ग्राम पंचायत भवनों में किया जाएगा। इसके तहत हर परिवार का सर्वेक्षण कर पंडो परिवार की जानकारी एकत्रित कर उनकी आवश्यकता और उपलब्ध सुविधाओं का आकलन करने के बाद संबंधित विभागों द्वारा आवश्यक कार्यवाही की जा रही है। इन पंडो परिवारों को मूलभूत सुविधाओं और योजनाओं से शत-प्रतिशत संतृप्त करने के लिए शिविरों का रोस्टर और कार्ययोजना बनाई गई है। रोस्टर के अनुसार प्रत्येक गांव में शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसमें तिथियों का निर्धारण कर जनजाति के लोगों को सरकारी योजनाओं से लाभान्वित किया जा रहा है।

शिविरों के सफल क्रियान्वयन के लिए, कलेक्टर एस जयवर्धन ने विभिन्न विभागों के जिला अधिकारियों को जिम्मेदारियां सौंपी हैं। सभी विभाग के अधिकारियों द्वारा अद्यतन जानकारी परियोजना प्रशासक व एकीकृत आदिवासी विकास परियोजना सूरजपुर को उपलब्ध कराई जाती है। इस वर्ग के विकास के लिए जिला प्रशासन, जनपद पंचायत, और आदिवासी विकास परियोजना के अधिकारी समन्वय में कार्य कर रहे हैं। हर विभाग के अधिकारी को अपनी जिम्मेदारियों को निभाने के निर्देश दिए गए हैं, ताकि विकास की यह प्रक्रिया निर्बाध रूप से

आगे बढ़ सके।

इस पहल से इस आदिवासी वर्ग के जीवन स्तर में निरंतर सुधार आ रहा है। शिविरों के आयोजन से पंडो जनजाति को स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, आवास और आर्थिक सहायता की योजनाओं का लाभ विशेष शिविरों के माध्यम से उन्हें योजनाओं से जोड़ा जा रहा है। इन शिविरों में जिन योजनाओं का लाभ प्रदान किया जा रहा है, उनमें प्रमुख रूप से प्रधानमंत्री आवास योजना, आयुष्मान भारत योजना, उज्ज्वला योजना, स्वच्छ भारत मिशन, और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना शामिल हैं। इन योजनाओं के तहत पंडो जनजाति के परिवारों को पक्के मकान, स्वास्थ्य बीमा, मुफ्त गैस कनेक्शन, शौचालय निर्माण और सस्ती दरों पर खाद्यान्न उपलब्ध कराया जा रहा है। शासन एवं प्रशासन के इस प्रयास की सराहना पंडो जनजाति और स्थानीय समुदाय के लोगों द्वारा निरंतर की जा रही है। पहले जहां इन जनजातियों को मूलभूत सुविधाओं की कमी और योजनाओं से वंचित रहने की शिकायत थी, वहीं अब इन शिविरों के माध्यम से उन्हें उनका हक मिल रहा है। कई पंडो परिवारों ने अपने अनुभव साझा किए हैं कि कैसे इन योजनाओं के कारण उनके जीवन में बदलाव आया है।

इस योजना के संबंध में स्थानीय पंडो निवासी रामेश्वर पंडो ने बताया कि पहले हमें शासन की योजनाओं के बारे में सही जानकारी नहीं मिल पाती थी, और न ही हमें पूरी तरह से उनका लाभ मिल पाता था। लेकिन अब विशेष शिविरों के माध्यम से हमें सरकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है। हमारे परिवार को आवास योजना का लाभ मिला है, और हमें स्वास्थ्य बीमा भी मिला है। इससे हमारे जीवन में काफी सुधार हुआ है।

उल्लेखनीय है कि इस संपूर्णता अभियान अंतर्गत जिले के सभी विकासखंडों सूरजपुर, रामानुजनगर, प्रेमनगर, भैयाथान, ओडगी और प्रतापपुर के ग्रामों में निवासरत विषेष पिछड़ी जनजाति पंडो को शासन की योजनाओं से लाभान्वित करने एवं संतृप्तिकरण प्राप्त करने की दिशा में निरंतर शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसके अंतर्गत परिवार के मुखिया आधारित योजनाओं को देखा जाए तो विभिन्न ग्राम पंचायतों में 124 शिविर का अयोंजन कर 82 घरों में विद्युतीकरण, 184 हितग्राहियों को प्रधानमंत्री आवास योजना, 72 शौचालय, 118 का मनरेगा जॉब कार्ड, 209 को उज्जवला गैस कनेक्षन, 389 को किसान क्रेडिट कार्ड, 250 को पीएम किसान सम्मान निधि एवं 73 घरों में हर घर नल से जल की सुविधा प्रदान की गई।

इसके अलावा हितग्राहीमूलक योजनाओं को देखा जाए तो 191 हितग्राहियों का जाति प्रमाण पत्र, 322 का आधार कार्ड, 393 का राशन कार्ड, 99 को वोटर कार्ड, 116 को पेंशन, 243 स्व सहायता समूह गठन, 16 हितग्राहियों को वनधन केंद्र आजीविका, 44 का कौशल विकास, 583 हितग्राहियों का श्रम विभाग में पंजीकरण, 347 को प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, 113 को प्रधानमंत्री पोषण योजना, 278 को सुकन्या समुद्धि योजना से लाभन्वित किया गया। 291 हितग्राहियों का आंगनबाड़ी में पंजीयन, 496 का आयुष्मान कार्ड निर्माण, 107 को प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान का लाभ, 1558 का सिकल सेल एनीमिया जांच, 140 हितग्राहियों का टीकाकरण, 949 हितग्राहियों का टीवी उन्मूलन जांच, 1166 लोगों का कुष्ठ रोग जांच, 33 को प्रधानमंत्री जनधन योजना से, 91 को जीवन ज्योति बीमा योजना एवं 158 हितग्राहियों को सुरक्षा बीमा योजना से लाभान्वित किया गया है।

वकील मुकदमा जीतता है या सीखता है, हारता नहीं : अरुण साव

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। उप मुख्यमंत्री तथा विधि एवं विधाई कार्य मंत्री अरुण साव मुंगेली में अधिवक्ता संघ के शपथ ग्रहण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। जिला एवं सत्र न्यायाधीश चन्द्र कुमार अजगल्ले ने करही स्थित जिला एवं सत्र न्यायालय में संघ के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को शपथ दिलाई। उप मुख्यमंत्री साव ने मुंगेली जिला एवं सत्र न्यायालय में ई-लाइब्रेरी की घोषणा की। उन्होंने वहां सुविधाओं के विस्तार के लिए हरसंभव सहयोग का आश्वासन दिया। उन्होंने मुंगेली बार को आदर्श और सुविधाजनक बनाने के लिए भी प्रयास करने की बात कही। विधायक पुन्नुराम मोहले भी समारोह में शामिल हुए।

उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने शपथ ग्रहण समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि मेरा अधिवक्ताओं से बहुत गहरा नाता है। मेरा सौभाग्य है कि मैं भी इस बार का सदस्य रहा हूं और आज मुख्य अतिथि के रूप में आने का मौका मिला है। मुंगेली बार का इतिहास

अत्यंत वैभवशाली और गौरवशाली रहा है। उन्होंने कहा कि अधिवक्ताओं की जवाबदारी बहुत बड़ी है, इसलिए पक्षकार से मुकदमा लेने के बाद उसे न्याय दिलाने की पूरी कोशिश करनी चाहिए। वकील मुकदमा जीतता है या सीखता है, हारता नहीं है। समाज में वकीलों की बहुत प्रतिष्ठा है। समाज की सेवा में आपका भी योगदान महत्वपूर्ण होना चाहिए। श्री साव ने कहा कि पक्षकार कितने रुपए देगा, इसका मूल्यांकन नहीं करना चाहिए। अधिवक्ताओं का पूरा ध्यान पक्षकारों को न्याय दिलाने में होना चाहिए। उन्होंने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को मुंगेली बार की गरिमा को और आगे बढ़ाने को कहा। विधायक पुन्नूलाल मोहले ने अधिवक्ता संघ के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई और शुभकामनाएं देते हुए आशा जताई कि सभी पदाधिकारी समाज की सेवा के लिए बेहतर कार्य करेंगे। जिला एवं सत्र न्यायाधीश चन्द्र कुमार अजगल्ले ने मुंगेली बार की सराहना करते हुए अधिवक्ताओं को बिना किसी भेदभाव के पीड़ितों को समभाव से न्याय दिलाने की बात कही। कलेक्टर राहुल देव, पुलिस अधीक्षक भोजराम पटेल, पूर्व सांसद लखन लाल साहू, मुंगेली नगर पालिका के अध्यक्ष संतुलाल सोनकर, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट बलराम देवांगन, द्वितीय व्यवहार न्यायाधीश वर्ग-एक वरिष्ठ श्रेणी रेशमा बैरागी पटेल, वरिष्ठ अधिवक्ता गिरीश शुक्ला और संजय गुप्ता भी समारोह में मौजूद थे। जिला एवं सत्र न्यायाधीश चन्द्र कुमार अजगल्ले ने अधिवक्ता संघ के नवनिर्वाचित जिलाध्यक्ष राजमन सिंह ठाकुर, उपाध्यक्ष आकुम गेंदले, उपाध्यक्ष सुश्री रूखमणी दिव्या, सचिव राजेन्द्र चन्द्रवंशी, संरक्षक विरेन्द्र कुमार मिश्रा, सहसचिव रजनीकांत ठाकुर, कोषाध्यक्ष प्रदीप हरवंश, ग्रंथालय सचिव अमित सोनी, सांस्कृतिक एवं क्रीड़ा सचिव जीवन लाल बंजारा, कार्यकारिणी सदस्यों सर्वश्री मनोज केशरवानी, गोली बर्मन, सुरेन्द्र देवागंन, हरप्रीत कौर आजमानी, बोधराम साहू और विजेन्द्र सिंह को शपथ दिलाई।

स्वास्थ्य मंत्री ने 20 बिस्तरीय आईसोलेशन वार्ड का लोकार्पण और भारतीय जन औषधि केन्द्र का शुभारंभ किया

संविदा भर्ती के 47 विभिन्न पदों पर नियुक्ति हेतु दिए आदेश पत्र

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। प्रभारी मंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने जिला चिकित्सालय जीपीएम में 20 बिस्तरीय आईसोलेशन सह पीडियाट्रिक वार्ड का लोकार्पण और भारतीय जन औषधि केन्द्र का फीता काटकर शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन अंतर्गत संविदा भर्ती के 47 विभिन्न पदों पर नियुक्ति हेतु आदेश पत्र दिए।

उन्होंने सभी लोगों को भारत को टी. बी. मुक्त बनाने की शपथ भी दिलाई। संविदा भर्ती के पदों में स्टॉफ नर्स एनआरसी, नर्सिंग ऑफिसर एनएचएमपी, सीनियर नर्सिंग ऑफिसर (मनोरोग नर्स), साइकोलॉजिस्ट-क्लिनिकल,

द्वितीय एएनएम, एएनएम (आरबीएसके), डेंटल असिस्टेंट, ब्लॉक सुपरवाइजर (वीबीडी), एसटीएस, ओटी टेक्निशियन, लैब सहायक, नर्सिंग अधिकारी, जूनियर सचिवीय सहायक (एनएचएम), सचिवीय सहायक (आईडीएसपी), जूनियर सचिवीय सहायक (एनसीडी), जिला डाटा सहायक एवं सचिवीय सहायक (एनएचएम) के पद शामिल है।

महतारी वंदन योजना से बिखरी मुस्कान, सास-बहू के पारंपरिक रिश्ते को मिली नई पहचान

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। महतारी वंदन योजना छत्तीसगढ़ सरकार की एक अभिनव पहल है, जो महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के साथ ही उनका सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर सम्मान बढ़ाने का कार्य कर रही है। यह योजना महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर बना रही है, जिससे वे अपने परिवार की बेहतरी के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम होती हैं।

कुछ ऐसी ही कहानी है कोरबा जिले के ग्राम बगदरा गांव की श्रीमती इतवारा बाई के परिवार की। ग्रामीण महिला इतवारा बाई और उनकी बहू ममता, महतारी वंदन योजना के तहत मिल रही राशि से अपने परिवार को स्थिरता दे रही हैं। ग्रामीण परिवेश में जीविकोपार्जन के लिए आवश्यक संसाधनों की कमी और अनियमित रोजी-मजदूरी के कारण परिवार की आर्थिक स्थिति खराब थी, जिससे घर का खर्च चलाना भी कठिन हो रहा था।

योजना के तहत मिलने वाली राशि ने इतवारा बाई और ममता को अपने परिवार के स्वास्थ्य का ख्याल रखने के साथ ही दैनिक खर्चों को संभालने में मदद की। राशि के उचित उपयोग से वे अपने परिवार को सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा सहित अन्य लाभ दे रही है। उनकी मेहनत और योजना की मदद से अब परिवार की आर्थिक स्थिति सुधरी है। जिससे परिवार के जीवन स्तर को सुधार हुआ है और वे अब आत्मनिर्भर महसूस करती हैं और उनके परिवार में खुशहाली का माहौल है।

इस योजना का सबसे बड़ा लाभ यह है कि सास और बहू, दोनों को एक साथ आर्थिक सहायता मिल रही है। इससे दोनों पीढ़ियां न केवल एक-दूसरे के साथ मिलकर घर के खर्चों को सही तरीके से सम्हाल रही हैं, साथ ही उनके रिश्ते भी मजबूत हो रहे हैं। परिवार में खुशी का माहौल है, अब दोनों महिलाएं घर के निर्णयों में बराबरी से हिस्सा ले रही हैं और उनका आत्मविश्वास भी बढ़ा है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के सुशासन में स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार को लेकर एक और बड़ा कदम

रायपुर के मेकाहरा में बनेगा 700 बिस्तर का नया भवन, 231 करोड़ का ई-टेंडर जारी

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। राजधानी रायपुर के डॉ. भीमराव अंबेडकर स्मृति चिकित्सालय परिसर 700 बिस्तर के नए भवन का निर्माण होगा। अस्पताल में लगातार बढ़ रहे मरीजों के दबाव को देखते हुए नया भवन बनाने का निर्णय लिया गया है। 700 बिस्तर के एकीकृत नवीन अस्पताल भवन निर्माण के लिए टेंडर प्रक्रिया को शुरू कर दिया गया है। इस वर्ष के बजट में मेकाहारा परिसर में 700 नवीन एकीकृत अस्पताल का प्रावधान किया था जिसके निर्माण की प्रक्रिया अब शुरू कर दी गयी है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की पहल पर राज्य में स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार की दिशा में लगातार कार्य किया जा रहा है। स्वास्थ्य सुविधाओं में विस्तार के रूप में तरक्की और सुशासन का ये सफर लगातार आगे बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में राज्य में इलाज के लिए बेहतर संसाधन उपलब्ध हो सके इसके लिए लगातार पूंजीगत व्यय के निर्णय लिए जा रहे हैं। स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने कहा है कि राज्य में स्वास्थ्य सुविधाओं का इजाफा करना उनकी पहली प्राथमिकता है। उन्होने कहा है कि इस एकीकृत अस्पताल के निर्माण से मेकाहारा अस्पताल के अतिरिक्त भी लोगों के पास सर्वसुविधा वाला अस्पताल रहेगा।

इसमें रायपुर सहित सम्पूर्ण प्रदेश के लोगों को इलाज की बेहतर सुविधा उपलब्ध हो सकेगी और लोगों को ज्यादा से ज्यादा स्वास्थ्य सुविधा का लाभ मिलेगा। ई टेंडर के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी सीजीएमएससी की वेबसाइट www.cgmsc.gov.in पर 10 दिसंबर से उपलब्ध रहेगी । इसके लिए प्री-बिड मीटिंग 19 दिसंबर को सीजीएमएससी मुख्यालय में सुबह 11 बजे होगी। आनलाइन निविदा जमा करने की अंतिम तारीख 2 जनवरी 2025 तक होगी और 6 जनवरी 2025 को यह टेंडर खुलेगा।

व्हाइट कोट सेरेमनी के अवसर पर नवप्रवेशित चिकित्सा छात्रों ने ली चिकित्सा आचार संहिता की शपथ

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। पंडित जवाहर लाल नेहरू स्मृति चिकित्सा महाविद्यालय, रायपुर में एम. बी. बी. एस. प्रथम वर्ष में नव प्रवेशित विद्यार्थियों को चिकित्सा आचार संहिता की शपथ दिलाने के लिए ''व्हाइट कोट सेरेमनी'' का वृहद गौरवशाली आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में छत्तीसगढ़ राज्य के राज्यपाल रमेन डेका की गरिमामयी उपस्थिति रही।

पं. नेहरू चिकित्सा महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. विवेक चौधरी ने अपने स्वागत उद्बोधन में कहा कि एम. बी. बी. एस. प्रथम वर्ष के नवप्रवेशित 230 छात्र - छात्राओं को राज्यपाल महोदय की उपस्थिति में चिकित्सा आचार संहिता महर्षि चरक शपथ दिलाया जाना महाविद्यालय के लिए बड़े गौरव की बात हैं।

मेडिकल टीचर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. अरविंद नेरल ने मेडिकल प्रोफेशन के क्रियान्वयन के समय निभाये जाने वाले नैतिक मूल्यों और आदर्शों की जानकारी दी। डॉ. नेरल ने कहा कि मरीज दवाइयों के अलावा एक आदर्श चिकित्सक से अपनत्व, मुस्कुराहट और मित्रवत व्यवहार की अपेक्षा रखते हैं। मेडिकल साइंस सभी विज्ञानों में सबसे अधिक मानवीय और सभी मानविकी में सबसे अधिक वैज्ञानिक होता है। एक डॉक्टर ताउम्र विद्यार्थियों की तरह सीखता रहता है। अधिष्ठाता डॉ. विवेक चौधरी ने चरक आचार संहिता की शपथ विद्यार्थियों को दिलाई, उनके द्वारा कहे गए शब्दों को नवप्रवेशित 230 छात्र-छात्राओं ने अपना दाहिना हाथ उठाकर दोहराया।

मुख्य अतिथि राज्यपाल रमेन डेका ने चिकित्सा छात्रों को व्हाइट कोट समारोह की महत्ता बताते हुए कहा कि आज आपने जो शपथ लिया है उसका सदैव स्मरण करना अति आवश्यक है। चिकित्सा का क्षेत्र सेवा के साथ-साथ एक गरिमामयी प्रोफेशन है जिसमें ''यह व्हाइट कोट बेदाग रहे,'' इस बात का ध्यान रखना आवश्यक होता है। चरक संहिता एवं व्यक्तिगत जीवन से जुड़े कुछ अनुभवों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि एक चिकित्सक को बीमारी के मूल कारणों (रूट कॉज ऑफडिजीज) को जानने की कला में निपुण होना चाहिए। बतौर चिकित्सक मरीज के गोल्डन ऑवर में जीवन रक्षा के लिए बेहतर निर्णय लेने की क्षमता होनी चाहिए। राज्यपाल ने वैश्विक महामारी कोविड-19 के दौरान चिकित्सक एवं चिकित्सा कर्मियों के चिकित्सा सेवा, साहस और कार्य की सराहना करते हुए कहा कि आप सभी ने मानव सेवा के लिए जो कुछ भी किया वह अतुलनीय है। राज्यपाल के उद्बोधन पश्चात विद्यार्थियों द्वारा अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों का ज़िक्र करते हुए ''हम तुम्हारे साथ हैं, वी आर द डॉक्टर्स, वी आर आलवेज देयर फार यू'' की संगीतमय प्रस्तुति दी गई। एम. बी. बी. एस. चिकित्सा पाठ्यक्रम में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र-छात्राओं को गोल्ड मेडल देकर सम्मानित किया गया।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक राजेश अग्रवाल द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि. छत्तीसगढ़ भवन, प्रेस काम्पलेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित कर, 204 आकाशगंगा सुपेला, भिलाई जिला दुर्ग (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक राजेश अग्रवाल shreekanchanpath2010@gmail.com, Mo - 9303289950